एकलव्य का प्रकाशन

छींका-छींक

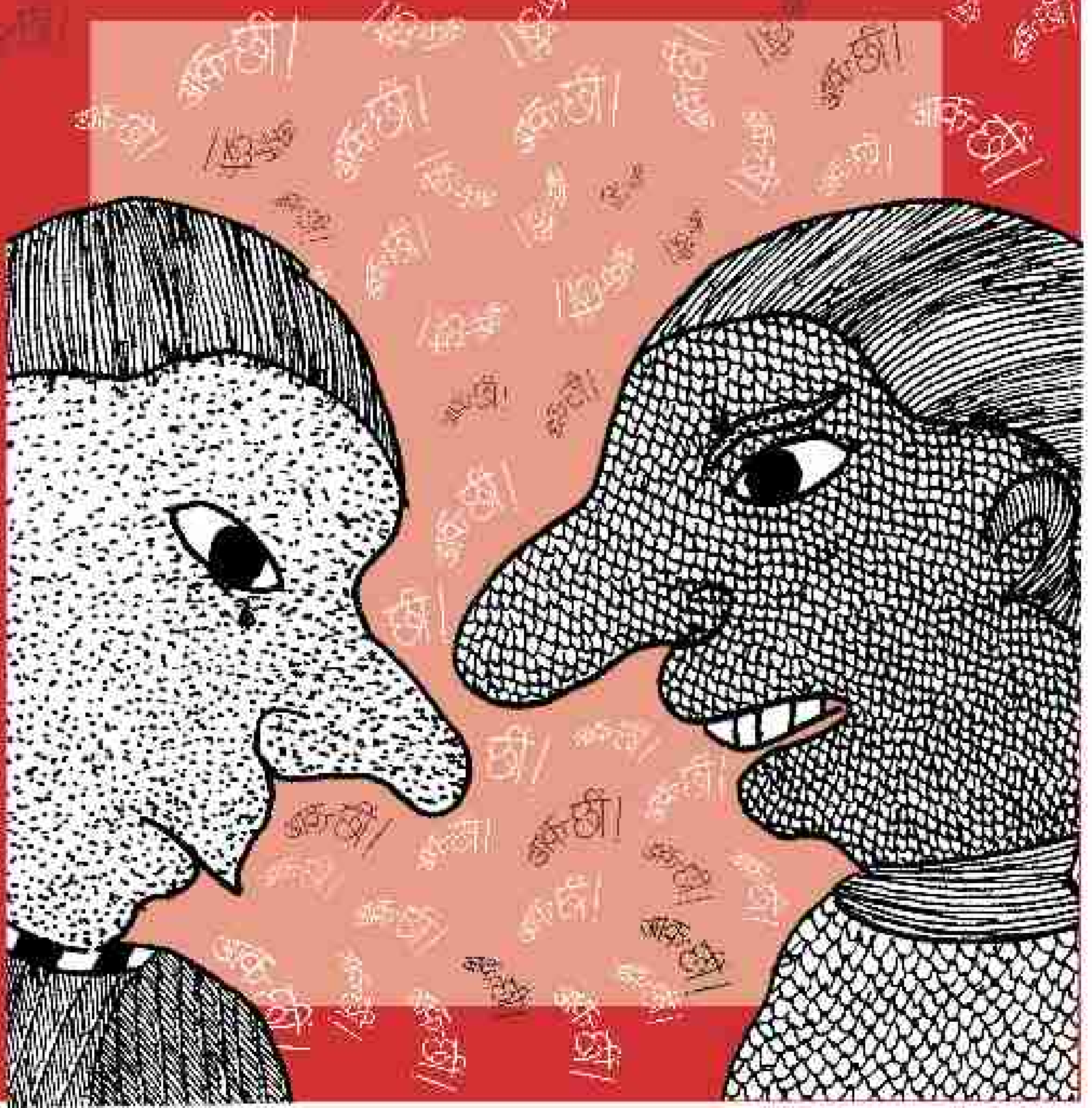

छींका-छींक

प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा भाषा शिक्षण के लिए संकलित लोककथाएँ

एकलव्य का प्रकाशन

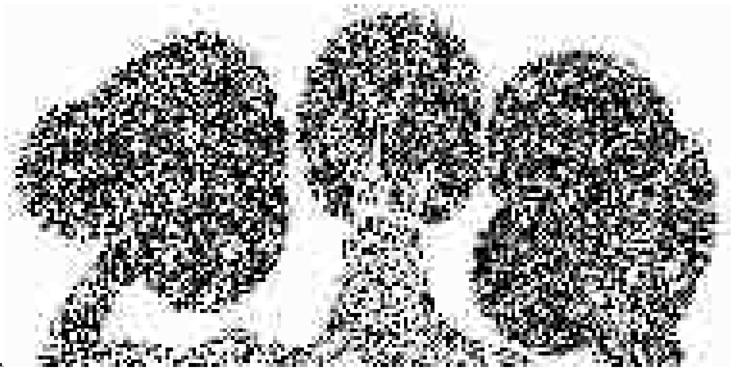

कविता और कहानी...

...में कई अन्तर हैं। कहानी को कविता की तरह शब्दशः कहना ज़रूरी नहीं है। यानी, उसे उसी तरह सुनाना ज़रूरी नहीं है जैसी वह लिखी गई है।

इस संग्रह की कहानियों को पढ़ने के बाद उन्हें अपने शब्दों में, अपनी शैली में बच्चों को सुनाएँ। सुनाते वक्त ध्यान रहे कि बच्चों के सामने पात्रों व घटनाओं का एक जीवन्त चित्र उभर पाए।

कहानी सुनाने के कई तरीके हैं। कहा नहीं जा सकता कि कौनसा तरीका अच्छा है, कौनसा नहीं। बस इतना ज़रूर है कि कहानी सुनने में बच्चों को मज़ा आना चाहिए। कहानी हावभाव सहित सुनाएँ ताकि लोमड़ी, मुर्गा, चूहा... यानी कहानी के पात्र कहानी में ही नहीं बल्कि कक्षा में, बच्चे के जीवन में भी घुस आएँ।

कहानी कहने के बारे में कुछ सुझाव...

* कहानी कहते समय बच्चे आपके नज़दीक बैठे हों। ऐसी नज़दीकी जो उन्हें नानी/दादी की गोद की याद दिला दे।
* कोशिश करें कि बच्चों की भाषा के कुछ शब्दों और वाक्यों का उपयोग बार-बार हो। बच्चों की भाषा के शब्द जानने के लिए शाला के बड़े बच्चों का सहयोग लें।
* रोचकता बढ़ाने और बच्चों का कहानी से जुड़ाव बनाए रखने के लिए तरह-तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं, ध्वनियों और पात्रों के हावभाव की नकल करने को कहा जा सकता है, घटनाक्रम में आगे क्या हुआ होगा बूझने के लिए कह सकते हैं। और तत्काल सुझाई गई दिशा में कहानी आगे बढ़ाई जा सकती है।

  पर ध्यान रहे कि सवाल कब और कैसे पूछे जाएँ, यह कुछ टेढ़ा मामला है। कभी-कभी सवाल पूछने से कहानी का क्रम टूट जाता है, मज़ा बिगड़ जाता है।
* कहानी सुनाते समय उससे सम्बन्धित चित्र भी साथ-साथ दिखाएँ। इससे बच्चों को मज़ा तो आएगा ही, ध्यान देने में भी आसानी होगी।
* बच्चों में लम्बे समय तक एक ही बात पर ध्यान देने की क्षमता कम होती है। आपकी कहानी सभी बच्चे अन्त तक पूरी रोचकता से सुनें, यह अपेक्षा करना सही न होगा। कहानी की लम्बाई आप अपनी कक्षा के बच्चों के अनुसार ही तय करें। चित्र दिखाएँ, हावभाव के साथ सुनाएँ, बच्चों की भागीदारी बढ़ाएँ, ध्यान रखें कि कहानी अधिक लम्बी न हो।
* कई अच्छी कहानियाँ काफी लम्बी होती हैं। इन्हें आप टुकड़ों में सुना सकते हैं। आज पहला भाग, कल अगला, फिर तीसरा - एक धारावाहिक की तरह। इससे बच्चों में आगे जानने की जिज्ञासा बनी रहेगी। ऐसा कुछ बड़े बच्चों के साथ ही किया जा सकता है जिन्हें क्रम में सुनने और याद रखने की आदत हो गई हो। पहली और दूसरी कक्षा के लिए छोटी कहानियाँ ही उपयुक्त रहेंगी। शाला में रोज़ लगभग आधा घण्टा कहानी के लिए दिया जा सकता है।

* जब बच्चे कहानी सुनने के आदी हो जाएँ तब कहानियाँ पुस्तकों में से पढ़कर भी सुनाई जा सकती हैं।
* कहानियाँ सुन-सुनकर बच्चे धीरे-धीरे कहानी कहने भी लगेंगे। पहले अनौपचारिक रूप से अपने साथियों को सुनाएँगे, फिर सामूहिक रूप से पूरी कक्षा को भी सुना सकते हैं। बच्चों को अपनी ही बोली (गोण्डी, कोरकू, निमाड़ी आदि) में कहानी सुनाने दें। इससे उनमें कक्षा में कुछ बोलने का विश्वास बढ़ेगा। शुरू में बच्चे पूरी कक्षा के सामने कहानी कहने से कतराएँगे। उन पर दबाव न डालें। ना ही उनकी गलतियाँ सुधारने पर ज़ोर दें। उन्हें हावभाव के साथ बोलने को प्रोत्साहित करें।
* कहानी सुनने और कहने से बच्चों को अपने आपको विभिन्न पात्रों में ढालने का और काल्पनिक स्थितियों में विचरने का मौका मिलता है। पहले तो बच्चे सिर्फ कुछ पात्रों की विशेषताओं की नकल करते हैं जैसे उनकी चाल आदि की। उदाहरण के लिए भालू कैसे चलता है, बकरी कैसे बोलती है, राजा किस तरह गुस्सा होता है, चिड़िया फुर्र से कैसे उड़ गई आदि। फिर कुछ स्थितियों की नकल भी करते हैं, (जैसे गोल-मटोल मुर्गा लोमड़ी से डरकर कैसे धप्प से गिरा;) मीनू ने मगर से अपनी गागर लेने की कोशिश कैसे की; छुटनक्कू और बड़नक्कू का सिर कैसे टकराया। धीरे-धीरे वे पूरी कहानी का अभिनय कर पाएँगे।
* इस पूरी प्रक्रिया में काफी समय लगता है। कक्षा पहली के अन्त तक तो कुछ ही बच्चे अभिनय के साथ कहानी सुना पाएँगे। अधिकांश बच्चे तीसरी या चौथी कक्षा तक ही इसमें सक्षम हो पाएँगे। इसलिए कहानी सुनने-सुनाने की प्रक्रिया पूरी प्राथमिक शाला में जारी रखें।
* कहानी के पात्रों का अभिनय करना एक स्वाभाविक दिशा है। यह मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का एक सशक्त माध्यम है। बच्चों की झिझक तोड़ने व उन्हें बोलने हेतु प्रोत्साहित करने का यह एक सहज तरीका है।
* पढ़ने की तैयारी कराने और फिर पढ़ने के लिए कहानी का उपयोग बखूबी किया जा सकता है। कहानी में बार-बार आने वाले वाक्यों व शब्दों को पट्टी पर लिख लें। बच्चों से शब्द और फिर अक्षर पहचानने के अभ्यास कराए जा सकते हैं।
* बच्चे भाषा और पढ़ना सीखना किसी सन्दर्भ में ही करते हैं। कहानी अपने आप में इस उद्देश्य के लिए एक रोचक सन्दर्भ है। कहानी सुनाते-सुनाते आप बीच में रुक जाएँ ताकि बच्चे आगे का शब्द/वाक्य पूरा करें। (जैसे, किसान बोला, "मैं जड़ें बेचने...") इस तरह बच्चे कहानी का सन्दर्भ समझकर वाक्य बनाएँगे। इससे धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने के कौशल विकसित हो पाएँगे।
* कई महत्वपूर्ण अवधारणाएँ कहानी का सहज हिस्सा होती हैं (जैसे बड़ा-छोटा, दूर-पास, मोटा-पतला आदि) और बच्चे इन्हें कहानी के माध्यम से खूब पकड़ते हैं। कहानी के सन्दर्भ से इनका एहसास होता है और अभिनय से उनका अर्थ और स्पष्ट हो जाता है। ऐसी कुछ कहानियाँ इस संग्रह में दी गई हैं। आप ऐसी और कहानियाँ ढूँढ या बना सकते हैं।

कहानी सुनते-सुनाते-पढ़ते बच्चे नई कहानियाँ बनाने भी लगेंगे। इस संग्रह की कहानियों पर टिप्पणी और आपकी व बच्चों की नई कहानियाँ हमें भेजें।

1.	सुरता और रीछ		5
2.	नन्हा पेड़		7
3.	मुर्गे की बाँग		9
4.	भन..भन..भन..		13
5.	छींका-छींक		14
6.	मीनू और मगर		16
7.	कुक्कड़ू कूँ		19
8.	मुनिया की बिल्ली		20
9.	बीज		25
10.	नटखट बन्दर		26
11.	बगीचे का घोंघा		28
12.	फक! फक! फक!		31
13.	धनराज की कमीज़		32
14.	फर-फर		33
15.	झाड़ू		34

1. सुरता और रीछ

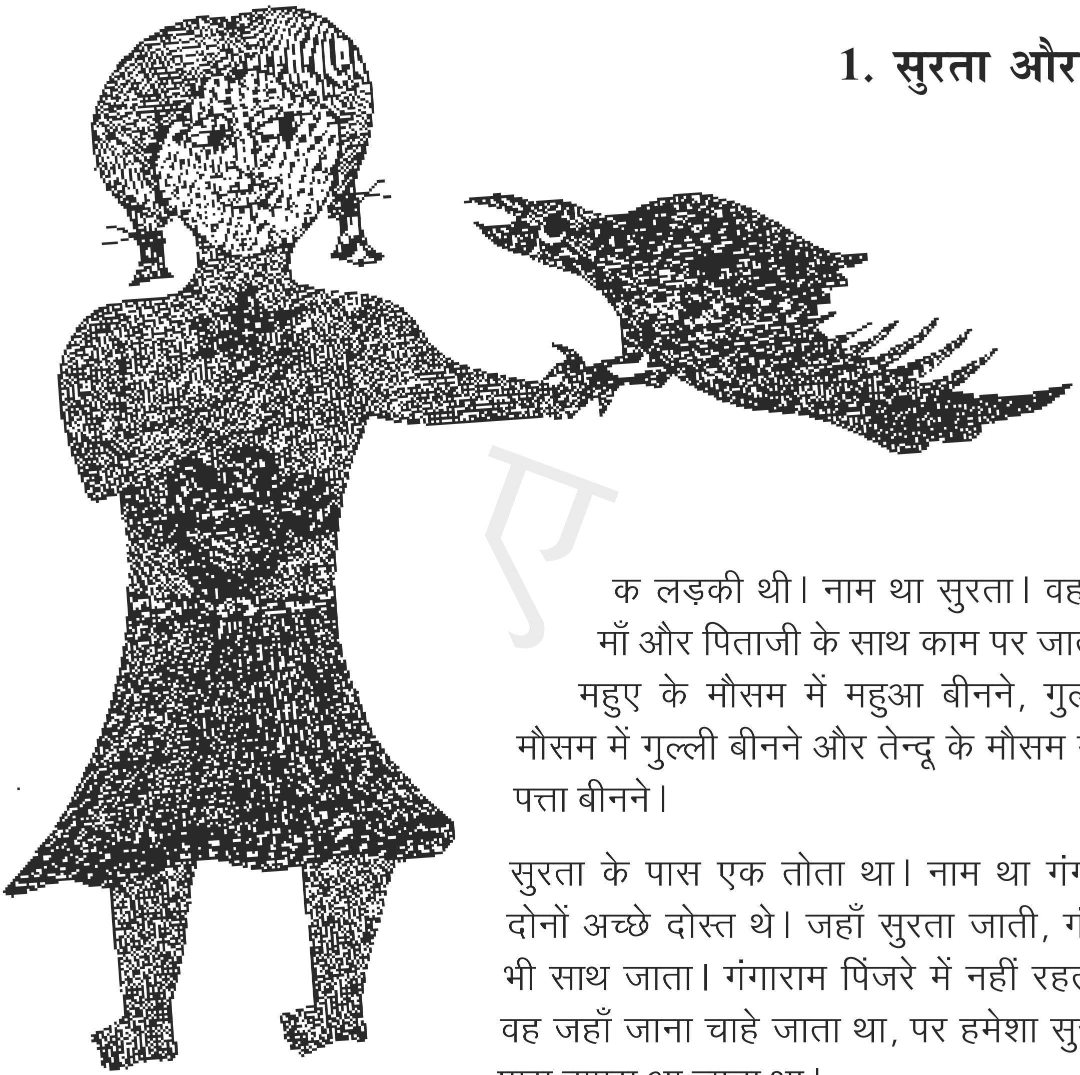

एक लड़की थी। नाम था सुरता। वह अपने माँ और पिताजी के साथ काम पर जाती थी। महुए के मौसम में महुआ बीनने, गुल्ली के मौसम में गुल्ली बीनने और तेन्दू के मौसम में तेन्दू पत्ता बीनने।

सुरता के पास एक तोता था। नाम था गंगाराम। दोनों अच्छे दोस्त थे। जहाँ सुरता जाती, गंगाराम भी साथ जाता। गंगाराम पिंजरे में नहीं रहता था। वह जहाँ जाना चाहे जाता था, पर हमेशा सुरता के पास वापस आ जाता था।

महुए का मौसम था। सुरता रोज़ सुबह उजाला होने से पहले ही अपनी माँ के साथ महुआ बीनने चली जाती थी। उसने अपने पिताजी से सुना था कि रीछ भी रात को महुआ खाने आते हैं। उनसे बचकर रहना चाहिए नहीं तो वे झपटकर मार डालते हैं।

एक रात सुरता अपनी खटिया पर सो रही थी। खटिया के नीचे गंगाराम सोया था। सुरता को एक सपना आया। उसने देखा - सुरता, उसकी माँ, पिताजी और तोता महुआ बीनने निकले थे। महुआ बीनते-बीनते सुरता अपनी माँ और पिताजी से दूर निकल गई थी। गंगाराम उसके कन्धे पर बैठा था। तभी एक पेड़ के नीचे सुरता को

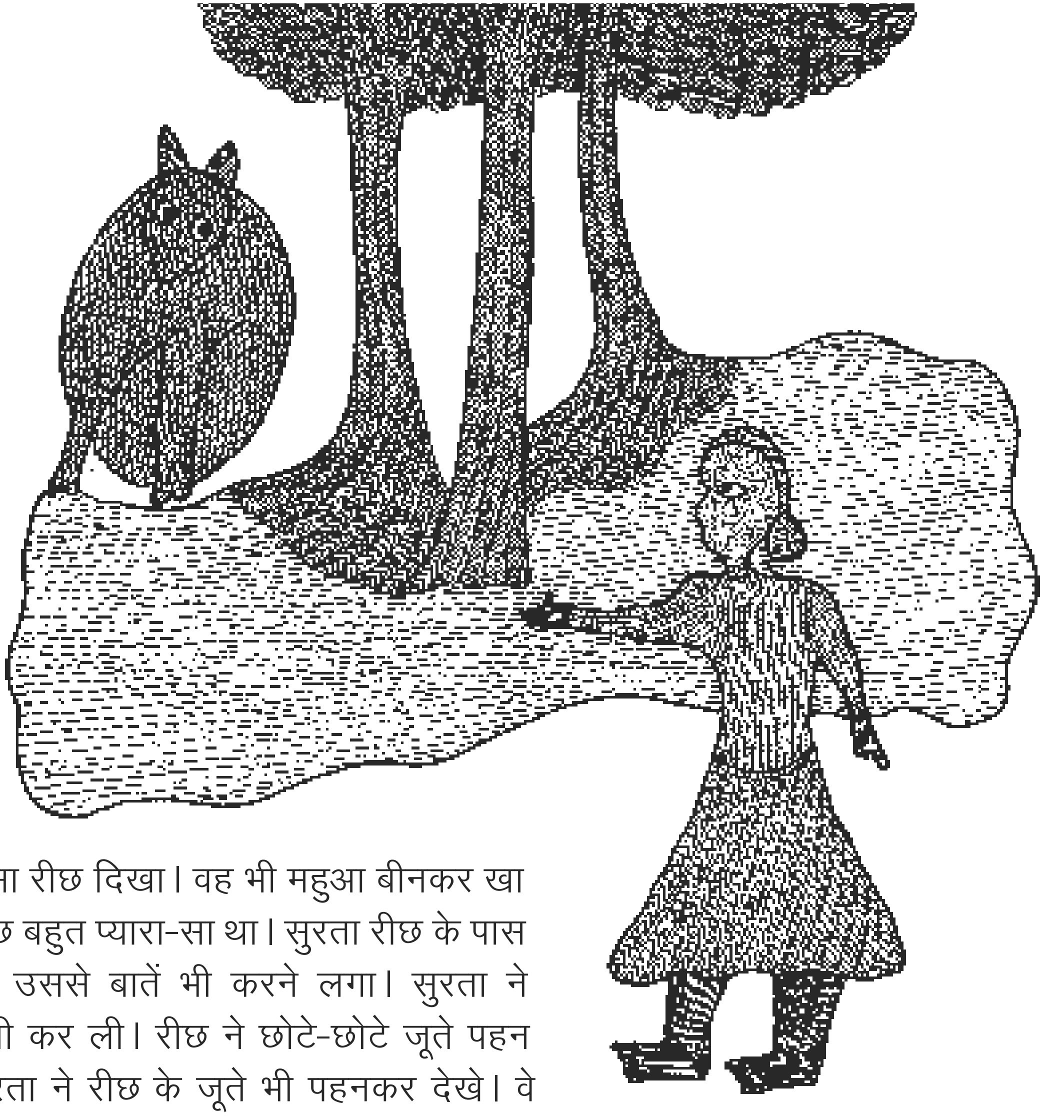

एक छोटा-सा रीछ दिखा। वह भी महुआ बीनकर खा रहा था। रीछ बहुत प्यारा-सा था। सुरता रीछ के पास गई तो वह उससे बातें भी करने लगा। सुरता ने उससे दोस्ती कर ली। रीछ ने छोटे-छोटे जूते पहन रखे थे। सुरता ने रीछ के जूते भी पहनकर देखे। वे अजीब-से, गोल-गोल से थे। गंगाराम, छोटा रीछ और सुरता तीनों मिलकर खेलने लगे। उनको बड़ा मज़ा आ रहा था।

इतने में रीछ की माँ ने उसे पुकारा। छोटे रीछ ने कहा, "मैं अभी आया।" पर वह खेलता रहा। थोड़ी देर बाद रीछ की माँ वहीं आ गई। वह अपने बच्चे को सुरता के साथ खेलता देखकर बहुत नाराज़ हुई। वह दौड़कर सुरता पर लपकी। पर इससे पहले कि वह सुरता तक पहुँचती गंगाराम "टें-टें" करके उड़ आया। बड़ी रीछ के मुँह पर उसने चोंच मारी। रीछ घबरा गई। मौका देखकर सुरता भी वहाँ से भागी। गंगाराम उसके साथ उड़ गया।

सुरता की नींद खुली तो गंगाराम "टें-टें" कर रहा था। अभी उजाला नहीं हुआ था। सुरता की माँ उसे महुआ बीनने के लिए बुला रही थी।

2. नन्हा पेड़

एक जंगल में एक छोटा-सा पेड़ था। वह आँधी में हिलता, धूप में जलता और बारिश में भीगता रहता। जंगल में और भी पेड़ थे लेकिन नन्हा पेड़ सबसे अलग था। दूसरे पेड़ों पर तो हरे-भरे पत्ते थे लेकिन इस पेड़ पर सिर्फ काँटे थे।

छोटे पेड़ को यह बहुत बुरा लगता। वह सोचता सभी मुझसे डरते हैं। काँटों के डर से कोई मुझे छूता तक नहीं। कितना अच्छा होता अगर मेरे ऊपर सुनहरे पत्ते होते, बिलकुल सोने की तरह चमकीले।

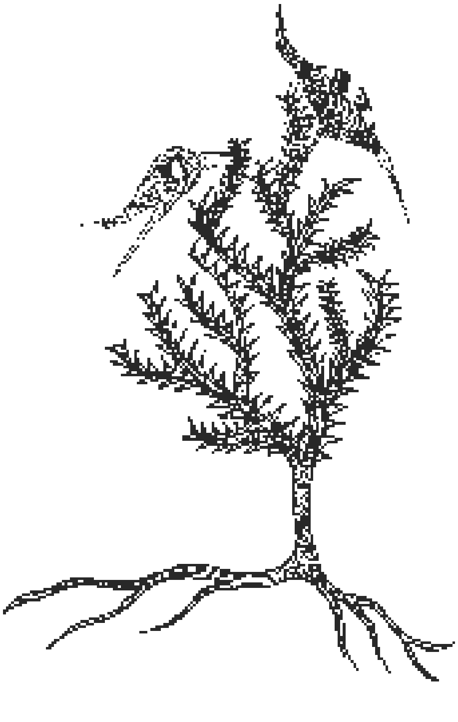

अगले दिन जब सूरज निकला तो एक अजीब-सी चीज़ दिखी। उस पेड़ के सारे काँटे गायब हो गए थे और ढेर सारे सुनहरे पत्ते उग आए थे। सूरज की रोशनी में वो चमचमा रहे थे। पेड़ बहुत खुश हो गया।

धीरे-धीरे शाम हो गई और फिर रात घिर आई। उस समय वहाँ पर एक आदमी आया। उसने देखा यहाँ तो सोने के पत्ते लगे हैं। चुपके-चुपके उसने सारे पत्ते तोड़कर थैली में भर लिए।

पेड़ बेचारा ठूँठ बन गया। उसे बहुत दुख हुआ। सोचने लगा - मेरे पत्ते ज़रूर हों लेकिन सुनहरे नहीं। काँच जैसे चमकदार होने से ही काम चल जाएगा।

सुबह हुई तो पेड़ पर सुन्दर-सुन्दर, रंग-बिरंगे काँच के पत्ते लगे हुए थे। पेड़ बहुत खुश हुआ। कहने लगा,

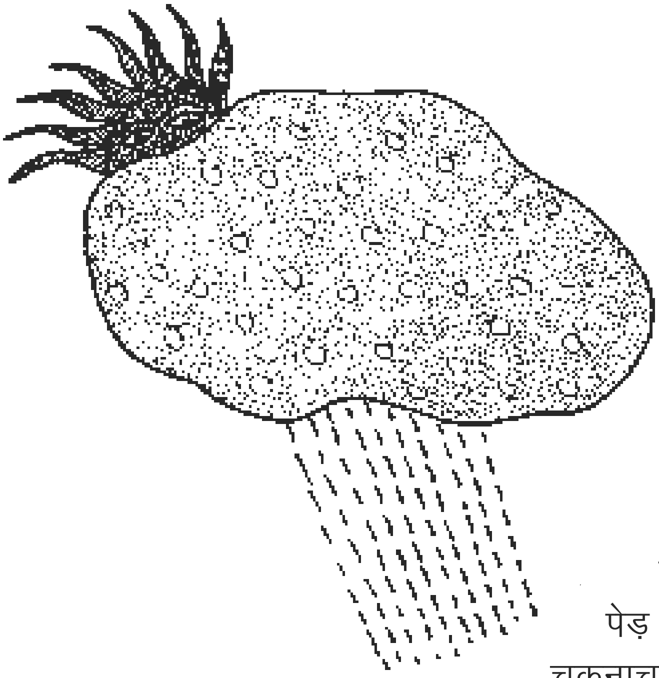

"देखे हैं ऐसे पत्ते किसी और पेड़ पर?"

उसी वक्त काले बादल छा गए और धीरे-धीरे सूरज बादलों के पीछे छिप गया। तभी न जाने कहाँ से तेज़ आँधी आई और पूरा जंगल हिलने लगा। बड़े-बड़े पेड़ तक ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगे। इसी तेज़ हवा में छोटे पेड़ के काँच के पत्ते झड़-झड़कर चकनाचूर हो गए।

पेड़ फिर से ठूँठ हो गया। कहने लगा, "अब मुझे न सोने के पत्ते चाहिए न काँच के। दूसरे पेड़ों की तरह के हरे पत्ते ही काफी होंगे मेरे लिए।"

अगले दिन सुबह उठते ही उसने देखा कि उसकी डालों पर हरे-भरे पत्ते हैं। अब मैं सचमुच बहुत खुश हूँ, छोटे पेड़ ने सोचा।

इतने में वहाँ से गुज़रते एक बकरे ने इस छोटे-से पेड़ पर हरे-हरे पत्ते देखे। वह आकर उन्हें झटपट खाने लगा। छोटा पेड़ चुपचाप देखता रहा। करता भी तो क्या। बकरे ने सब पत्ते खा लिए।

वह फिर से ठूँठ बन गया। दुखी होकर उसने कहा, "धत्तेरे-की। नहीं चाहिए मुझे पत्ते - न काँच के, न सोने के, न हरे। इन पत्तों से तो मेरे पुराने काँटे ही अच्छे थे।"

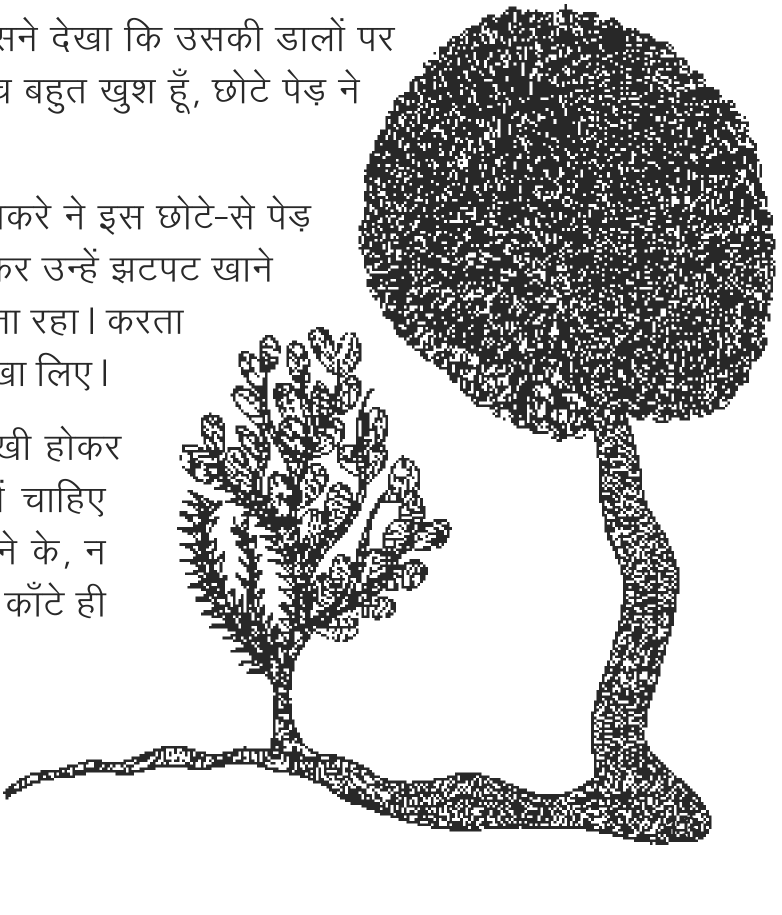

3. मुर्गे की बाँग

एक था मुर्गा। नाम था खूँ। पता है क्यूँ, क्योंकि वह कुक्कड़ कूँ की जगह करता था कुक्कड़ खूँ।

खूँ देखने में बहुत सुन्दर था। बहुत बड़ा-बड़ा सा, एकदम सफेद रंग का। उसकी सुन्दर-सी लाल रंग की चोंच थी और सिर के ऊपर लहराती हुई कलगी।

खूँ बड़ा चतुर भी था। एक लोमड़ी बहुत दिनों से उसे पकड़कर खाने की ताक में थी। लेकिन हर बार खूँ उससे बच निकलता था। इसलिए खूँ अपने आपको बहुत ज़्यादा समझने लगा था।

एक दिन खूँ ने सोचा कि वह पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर जाकर बैठेगा। वह उड़ा और पंख फड़फड़ाते हुए सबसे ऊँची वाली डाल पर बैठने ही वाला था कि अचानक... ज़ोर से हवा का एक झोंका आया और खूँ ऊपर से गिर पड़ा। उसे देखकर सभी जानवर हँसने लगे। कुत्ता भों हों हों, भों हों हों करके हँस रहा था।

बताओ बकरी कैसे हँस रही थी? और घोड़ा कैसे हँस रहा होगा?

खूँ को गुस्सा आ गया। उसका चेहरा फूल गया और आँखें लाल हो गईं। वह कौंक-कौंक कौंक-कौंक करके सोचने लगा - ये लोग मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। मैं इन्हें नहीं छोड़ूँगा। सुबह होने दो। इन सबको बता दूँगा।

अगले दिन तड़के ही मुर्गा उठ गया। इतनी सुबह थी कि अभी सूरज तक नहीं जागा था। खूँ ने अपने पंख से अपनी आँखें मलीं, ज़ोर से अँगड़ाई ली। फिर वह अपनी गर्दन लम्बी करके ज़ोर से कुक्कड़ू खूँ चिल्लाने ही वाला था कि रुक गया।

उसने कुक्कड़ू खूँ नहीं किया। उसे याद आ गया कि कैसे कल सब जानवर उस पर हँस रहे थे। खूँ ने सोचा - अब देखना। अब पता चलेगा इनको, मेरे ऊपर हँसने का क्या मतलब होता है।

जब मुर्गे ने कुक्कड़ूँ खूँ किया ही नहीं तो कोई जानवर जगा ही नहीं। भला मुर्गे की बाँग के बिना कोई कैसे जागता? सभी जानवर सोते रह गए।

धीरे-धीरे सूरज उगा। पहले वह दूर के पहाड़ों के ऊपर आया। अब उसका चेहरा पेड़ों के ऊपर भी दिखाई देने लगा। लेकिन अभी भी सारे जानवर सोते ही रहे।

सोते-सोते वे खुर्राटे ले रहे थे। कुत्ता कर रहा था भौर्र-र्र-र्र, भैं-र्र-र्र-र्र।

बताओ बकरी कैसे खुर्राटे ले रही होगी? और घोड़ा कैसे खुर्राटे ले रहा होगा?

धीरे-धीरे सूरज और भी चढ़ गया। अब मुर्गे को भूख लगी। उसने इधर देखा, उधर देखा। ऊपर देखा, नीचे देखा। फिर उसे याद आया कि घोड़े के लिए बहुत सारे चने रखे होंगे। खूँ हमेशा कोशिश करता था कि घोड़े के लिए रखे चने खा ले। लेकिन घोड़ा खाने ही नहीं देता था। आज खूँ को लगा कि घोड़ा तो सो रहा है, इसलिए अब मौका है।

मुर्गा पेड़ से उतर आया और चने खाने लगा। उसने खूब चने खाए। खाता गया, खाता गया, खाता गया। इतना खाया, इतना खाया कि वह फूलकर एकदम गेंद की तरह गोल-मटोल कुप्पा हो गया। उसने एक बड़ी-सी डकार ली और धब्ब से बैठ गया। अब उससे चलते ही नहीं बनता था।

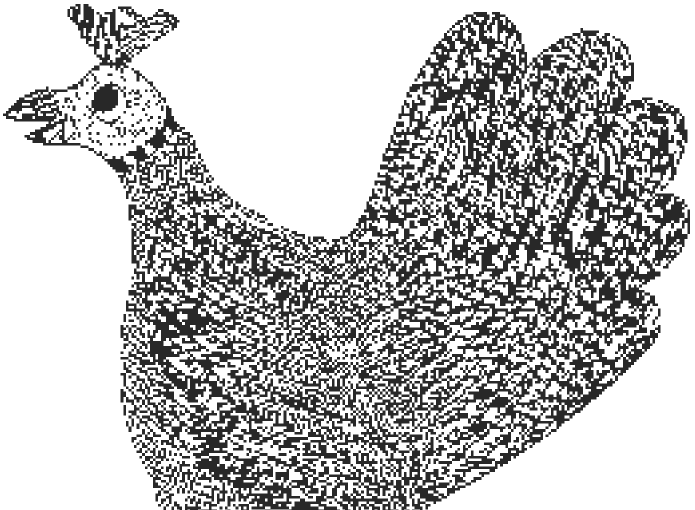

इतने में वहाँ लोमड़ी आई।

लोमड़ी ने देखा, अरे वाह! मुर्गे से तो चलते ही नहीं बनता है। अब बचकर कहाँ जाएगा।

मुर्गा बेचारा बुरी तरह घबरा गया। उसने डर के मारे एकदम पीछे हटने की कोशिश की लेकिन उससे तो हिलते ही नहीं बना।

अब लोमड़ी उसकी तरफ बढ़ने लगी। उसका मुँह खुला हुआ था। उसके पैने-पैने दाँत चमक रहे थे। लाल-लाल जीभ लपलपा रही थी और मुँह से लार टपक रही थी। "मैं तुमको खा जाऊँगी," लोमड़ी ने कहा। "मैं तुमको खा जाऊँगी।"

लोमड़ी और भी पास आ गई। खूँ को उसकी काली नाक और चमकती आँखें दिखने लगीं। लोमड़ी खूँ पर झपटकर उसकी गर्दन दबोचने ही वाली थी कि अचानक...।

मुर्गे को कुछ याद आ गया। वह ज़ोर से चिल्लाया, कुक्कड़ू कूँ। यह सुनते ही सभी जानवर जाग उठे। उन्होंने देखा कि लोमड़ी मुर्गे पर झपटने वाली है। कुत्ता तेज़ी से दौड़ता हुआ आया और ज़ोर से लोमड़ी की पूँछ काट खाई। बकरी दौड़ती हुई आई और लोमड़ी को ज़ोर से सींग मार दिए। घोड़ा दौड़ता हुआ आया और लोमड़ी को इतनी ज़ोर से दुलत्ती मारी कि लोमड़ी गुलाँटी खाती हुई हवा में उछल पड़ी। ज़मीन पर वापस गिरने के बाद वह वहाँ से जो भागी कि अभी तक नहीं दिखी।

उस दिन के बाद से मुर्गा भी रोज़ समय पर कुक्कड़ू कूँ करता चला आ रहा है।

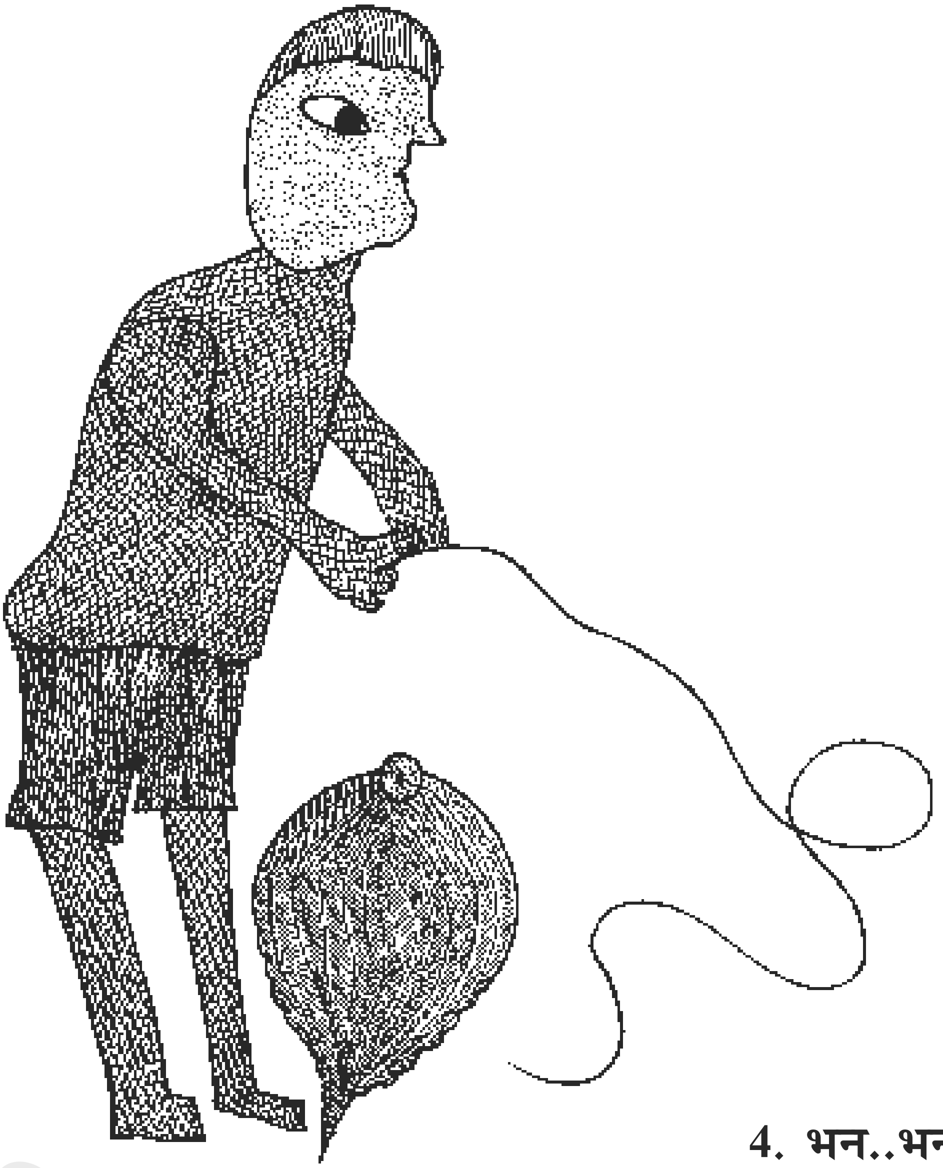

4. भन..भन..भन..

भन..भन..भन.. मेरा गीत तो सुनो।

भन..भन..भन.. तुम मुझे डोरी से बाँध लेते हो तो मैं चुप हो जाता हूँ। डोरी खींच लो। बस मैं ज़मीन पर नाचकर गाने लगूँगा। भन..भन..भन..

भन..भन..भन.. मैं कैसा बाँका खिलाड़ी हूँ। एक पैर से नाचता हूँ। जितना चाहो मुझे नचा लो। मैं अपना गाना शुरू करता हूँ। कहीं हँस न देना। भन..भन..भन..

5. छींका-छींक

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में एक आदमी रहता था। उसकी बहुत बड़ी, मोटी और लम्बी-सी नाक थी। इसलिए लोग उसे बड़नक्कू कहा करते थे। बड़नक्कू को अपनी नाक इतनी पसन्द थी कि वह उसकी बड़ाई किया करता। जब भी वह किसी से मिलता तो वह हाथ मिलाने की जगह अपनी नाक आगे कर देता था।

एक दिन बड़नक्कू बाज़ार गया। पता है वहाँ उसे कौन मिला? छुटनक्कू। छुटनक्कू की नाक बिलकुल छोटी-सी थी, जो उसको बहुत बुरी लगती थी। छुटनक्कू जब किसी से मिलता तो अपना चेहरा छिपाने की कोशिश करता ताकि कोई उसकी छोटी-सी नाक देखकर उसका मज़ाक न उड़ाए।

जब छुटनक्कू बाज़ार में बड़नक्कू से मिला तो उसने सोचा - हर बार मुझे ही क्यों नाक छिपानी पड़ती है? इस बड़नक्कू को तो देखो कैसे नाक लिए फिरता रहता है। छुटनक्कू को गुस्सा आ गया। उसकी जेब में खूब सारी लाल मिर्च रखी थी। उसने मुट्ठीभर लाल मिर्च निकाली। जैसे ही बड़नक्कू ने अपनी नाक आगे की छुटनक्कू ने मिर्च भरे हाथ से उसकी नाक पकड़ ली। बड़नक्कू छींका और छींका और ज़मीन पर गुलाँटी खाकर छींकता रहा।

हर बार जब वह छींकता तो आसपास के सब खिड़की-दरवाज़े खड़खड़ाकर हिल जाते थे।

छुटनक्कू खूब हँसा। ज़मीन पर लोटकर, हाथ-पाँव उछाल-उछालकर हँसता रहा। इतना हँसा कि वह भूल ही गया कि उसके हाथों में अभी भी मिर्च लगी हुई थी। हँसते-हँसते उसने अपनी ही नाक पर मिर्च वाला हाथ रख दिया।

आक-छीं! आक-छीं! छुटनक्कू भी छींका, आक-छीं! आक-छीं! हर बार जब उसे छींक आती तो उसका पूरा शरीर हवा में उछल जाता और बम फूटने जैसी आवाज़ आती।

छुटनक्कू और बड़नक्कू एक-दूसरे के सामने इतनी ज़ोर से छींक रहे थे कि अचानक धड़ाम की आवाज़ आई। सबने देखा कि दोनों के सिर धड़ाम से टकरा गए थे। इतनी ज़ोर से टकराए कि उनका छींकना ही रुक गया।

छुटनक्कू ने बड़नक्कू की तरफ देखा। बड़नक्कू ने छुटनक्कू की ओर देखा। वे एक-दूसरे को इतने मज़ेदार दिख रहे थे कि दोनों को हँसी आ गई। वे इतने झटके से हँसे कि फिर से उनकी छींक शुरू हो गई। वे हँसते रहे और छींकते रहे, हँसते रहे और छींकते रहे।

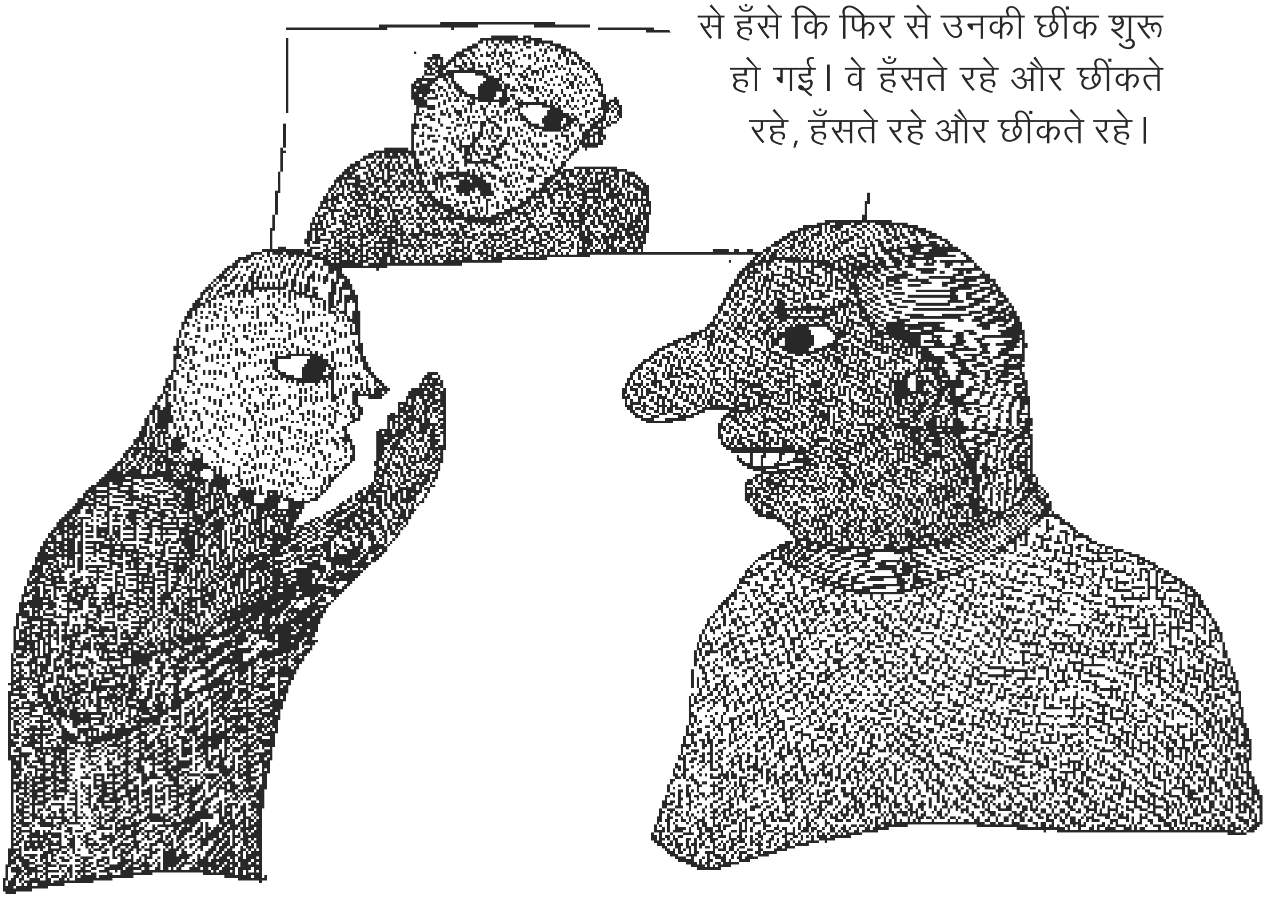

6. मीनू और मगर

एक थी लड़की। नाम था मीनू। बस वह तुम्हारी जितनी ही लम्बी थी। तो बताओ वह कितनी ऊँची रही होगी?

पता है मीनू कहाँ रहती थी? मीनू रहती थी जंगल में। जंगल में मीनू और उसकी माँ रहते थे। उस जंगल में रोज़ सुबह खूब ज़ोर से हवाएँ चलती थीं। मीनू रोज़ नदी में पानी भरने जाती। पता है पानी किस चीज़ में भरकर लाती थी? पीतल की गागर में।

एक दिन जब मीनू घर से पानी भरने के लिए निकल रही थी तो माँ ने कहा, "बेटी थोड़ा सम्हल के रहना। लोग कह रहे थे कि नदी में एक मगर आया है। गागर को भी सही सलामत वापस ले आना।"

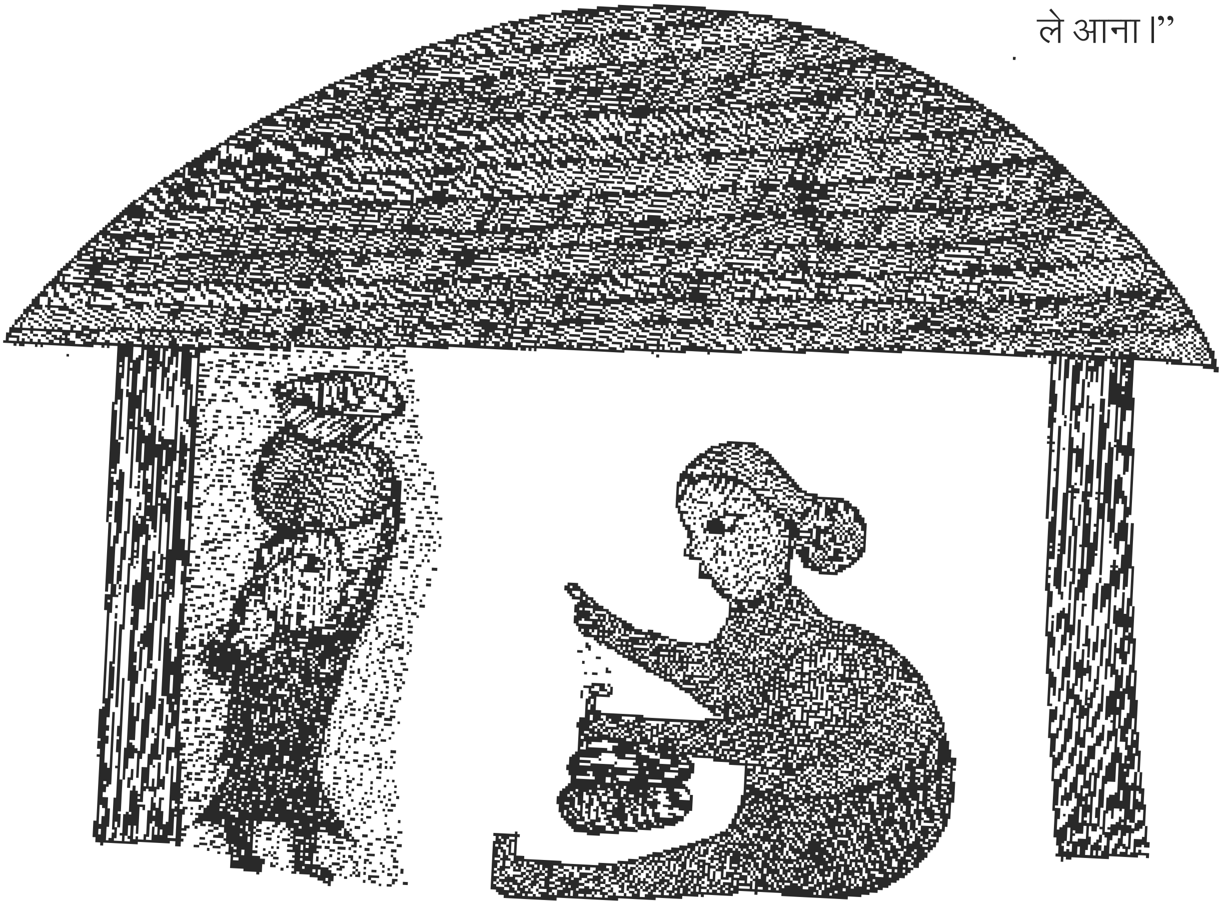

तुम्हें पता है मगर कैसा होता है? कितना बड़ा होता है?

मीनू निकल पड़ी। रास्ते में खेलती, फुदकती, कभी किसी झाड़ी के पीछे झाँकती, कभी देखती कि पेड़ के ऊपर क्या है। धीरे-धीरे वह नदी तक पहुँच रही थी।

उधर नदी में पत्थरों के पीछे मगर छुपा बैठा था। उसे बहुत भूख लगी थी। वह सोच रहा था - जैसे ही कोई आएगा मैं उस पर झपट पडूँगा।

कुछ समय बाद मीनू वहाँ पहुँची। वह नदी के किनारे बैठ गई और गागर को डुबाकर पानी भरने लगी। वह गागर निकालने ही वाली थी कि मगर छपाक-से उसके ऊपर झपट पड़ा। उसका बड़ा-सा मुँह खुला हुआ था। वह अपने पैने-पैने दाँतों से मीनू को पकड़ने ही वाला था कि मीनू ने आव देखा न ताव, बस धाड़ से गागर मगर के बड़े-बड़े जबड़ों में फँसा दी। मगर तो लड़की खाने के लिए कूदा था पर उसके मुँह में फँस गई पीतल की गागर। वह बेचारा गों......गों....... करता रह गया।

लेकिन मीनू के सामने एक आफत आ खड़ी हुई। उसे तो गागर वापस ले जानी थी। माँ ने कहा था कि गागर को सही सलामत ले आना। पर यहाँ तो गागर मगर के मुँह में फँसी हुई थी। तो बताओ उसने क्या किया होगा?

मीनू कुछ देर तक सोचती रही। फिर वह एक लकड़ी उठाकर लाई और ज़ोर से गागर पर दे मारी - टन्न से। मगर ने गों...गों... किया लेकिन गागर नहीं छोड़ी। मीनू ने और एक बार मारा। गों...टन्न, गों-टन्न। लेकिन मगर ने गागर नहीं छोड़ी।

मीनू थोड़ी देर और चुपचाप देखती रही। मगर भी वहाँ से गया नहीं। उसे पता था कि लड़की को गागर चाहिए और जब वह गागर लेने आएगी तो वह उसे पकड़ लेगा।

उधर मीनू ने धीरे से एक तिनका उठाया और मगर की नाक में घुसेड़ दिया। मगर को ज़ोर से छींक आई - गों..... गों.... आक छीं। उसने फिर भी गागर न छोड़ी। अब मीनू को किसी तरह गागर छुड़ानी थी।

सोचो और तुम्हीं बताओ उसने कैसे गागर छुड़ाई होगी?

7. कुक्कड़ू कूँ

कुक्कड़ू कूँ। कुक्कड़ू कूँ। उठो सबेरा हो गया।

सब बच्चे जाग गए। मुझे बहुत काम करने हैं। अब नहीं ठहर सकता।

कुक्कड़ू कूँ। जानते हो, मैं अपने पँजों से ज़मीन खोद डालता हूँ। खाने के लिए कुछ ढूँढ रहा हूँ। जो भी मिल जाएगा, घर ले जाऊँगा। सब लोग बाँटकर खा लेंगे।

कुक्कड़ू कूँ। वह देखो हमारे अण्डे रखे हैं। मादा इसीलिए वहाँ से नहीं हटती।

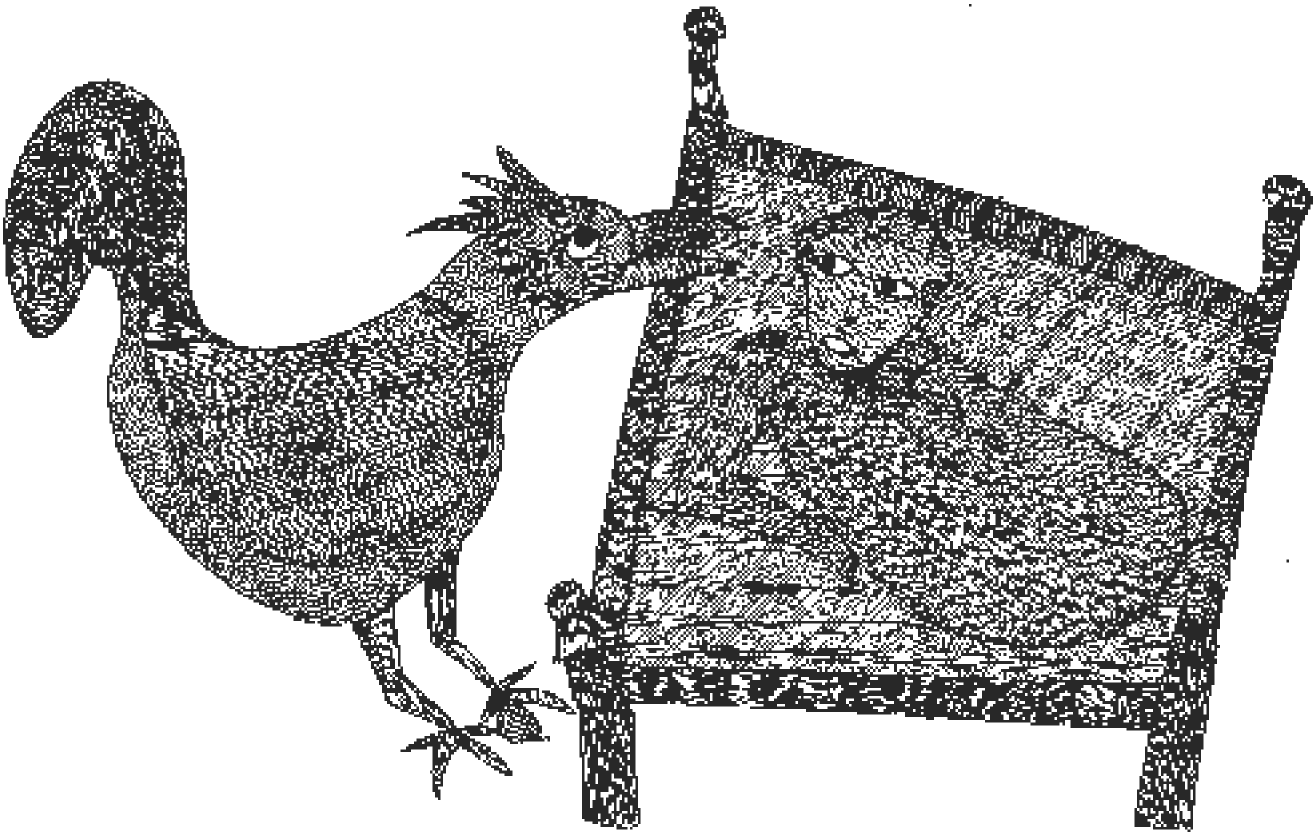

8. मुनिया की बिल्ली

मुनिया के घर अक्सर एक बिल्ली आती थी। वह कभी कुर्सी के नीचे छिपी बैठी मिलती तो कभी बिस्तर के नीचे। उसका रंग सफेद था। उस पर काले और पीले रंग के धब्बे थे। चितकबरी बिल्ली मुनिया को बहुत अच्छी लगती थी। मुनिया जब भी उसे देखती बड़े प्यार से उसे पुचकारती, "बिल्ली, मेरी बिल्ली, म्याऊँ-म्याऊँ।" पर बिल्ली मुनिया को पास आता देख फौरन भाग जाती। मुनिया को बहुत बुरा लगता। वह चाहती थी कि बिल्ली से उसकी दोस्ती हो जाए। लेकिन बिल्ली को मुनिया से डर लगता था। एक दिन बिल्ली अम्मा से मार खाते-खाते बची थी, शायद इसीलिए इतना डरती थी।

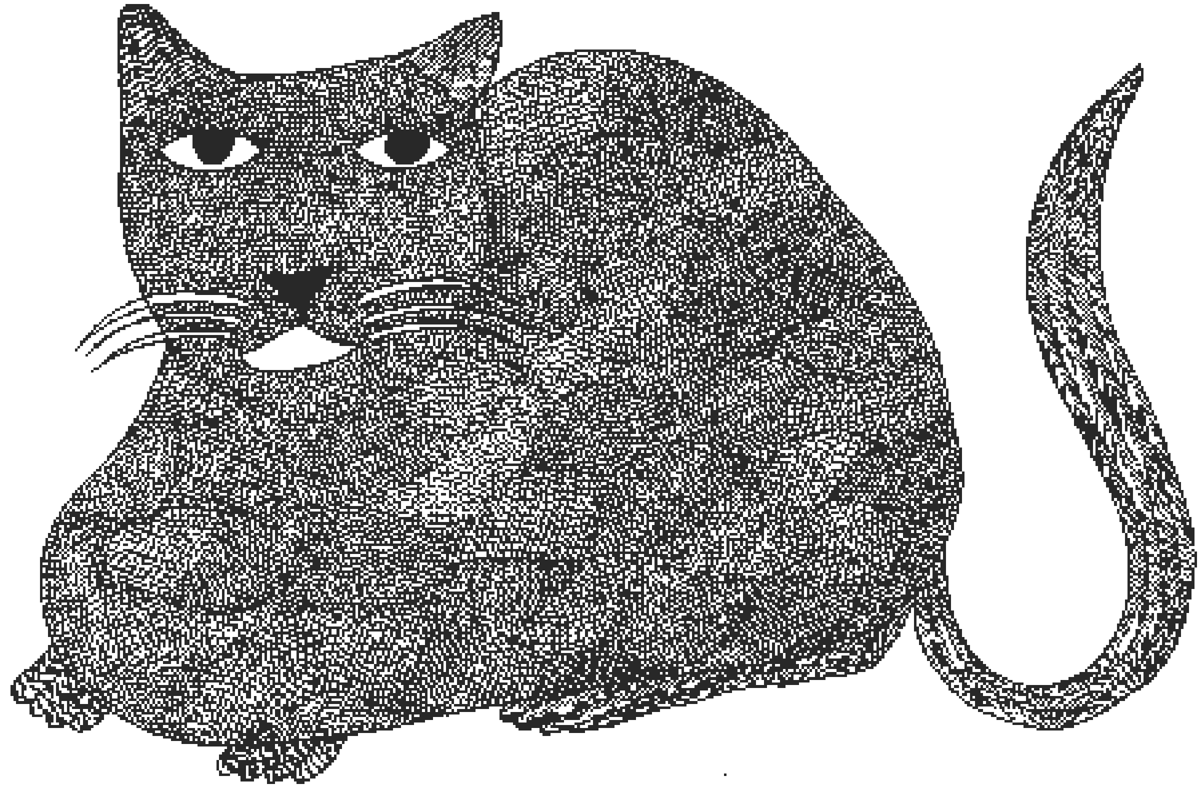

बात यह थी कि कुछ दिन पहले मुनिया की अम्मा, मुनिया के लिए गिलास में दूध लेकर आईं। जब वे आईं तो उन्होंने देखा कि मुनिया खेलने के लिए कहीं भाग गई है। उन्होंने दूध का गिलास वहीं मेज़ पर रख दिया और उसे बुलाने चली गईं।

बिल्ली न जाने कहाँ छिपी बैठी थी। उसने फौरन चप-चप करके दूध पीना शुरू कर दिया। इतने में अम्मा लौट आईं और चिल्लाईं, "अरे बिल्ली दूध पिए जाती है।"

आवाज़ सुनकर बिल्ली भागी तो गिलास लुढ़ककर नीचे गिरा और फूट गया। अम्मा को बहुत गुस्सा आया। दूध का दूध गिरा और गिलास भी फूट गया। उनके हाथ में एक छोटा-सा मिट्टी का हाथी था। मुनिया उसे खेलने के लिए बगीचे में ले गई थी। उन्होंने वही खींचकर बिल्ली को दे मारा। अम्मा का निशाना बहुत अच्छा नहीं था। हाथी बिल्ली से बहुत दूर जाकर गिरा और फूट गया। और बिल्ली डरकर भाग गई।

मुनिया को खेल के बीच में दूध पीने के लिए जाना बुरा लगता था। बिल्ली ने दूध गिरा दिया तो मुनिया बहुत खुश हुई। उसे बिल्ली अपनी दोस्त लगने लगी। लेकिन जब उसने देखा कि बिल्ली को मारने के पीछे हाथी फूट गया तो उसे रोना आने लगा। बोली, "अम्मा, तुमने बिल्ली को क्यों मारा! मेरा हाथी भी फोड़ दिया।"

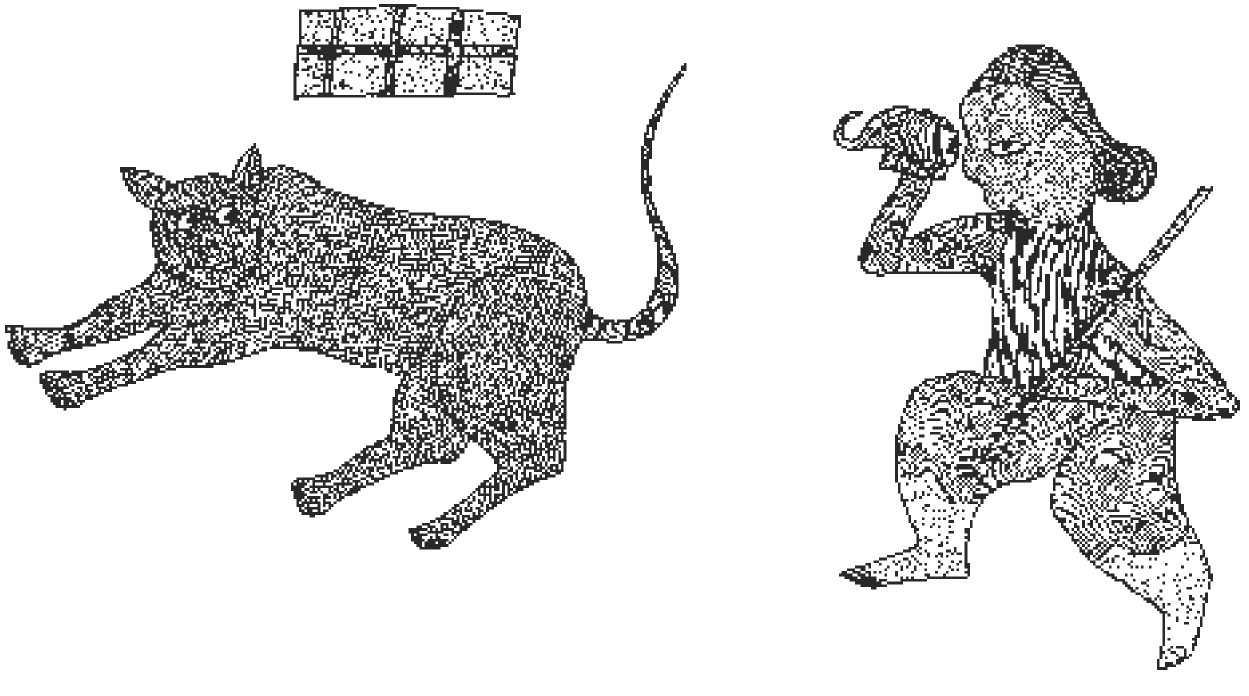

अम्मा को भी बुरा लग रहा था कि मुनिया का प्यारा हाथी उनसे टूट गया। अम्मा बोलीं, "मुनिया मैं तुम्हारा हाथी कल ही बाज़ार से मँगा दूँगी।"

मुनिया बोली, "बिल्ली को भी प्यार करना, तुमने उसे मारा है।"

अम्मा इस बात के लिए तैयार नहीं हुईं। बोलीं, "बिल्ली बहुत बुरी है। मेरा बहुत नुकसान करती है। मैं उसको प्यार नहीं करूँगी, तुम्हारा खिलौना ज़रूर मँगा दूँगी।"

अम्मा की यह ज़िद मुनिया की समझ में नहीं आई - उसे तो ज़िद करने पर डाँटती हैं और खुद ज़िद करती हैं।

लेकिन कुछ दिनों बाद अम्मा को भी बिल्ली को प्यार करना पड़ा। मुनिया के घर में चौके की खिड़की में तो जाली लगी थी। पर भण्डार घर की खिड़की में जाली नहीं लगी थी। एक दिन सवेरे-सवेरे जब अम्मा सामान निकालने भण्डार घर में गईं तो देखती हैं कि एक कोने में रखी पुरानी फल की टोकनी में पत्तों का गद्दा बनाकर बिल्ली ने पाँच बच्चे दिए हैं। बिल्ली अपने बच्चों के पास

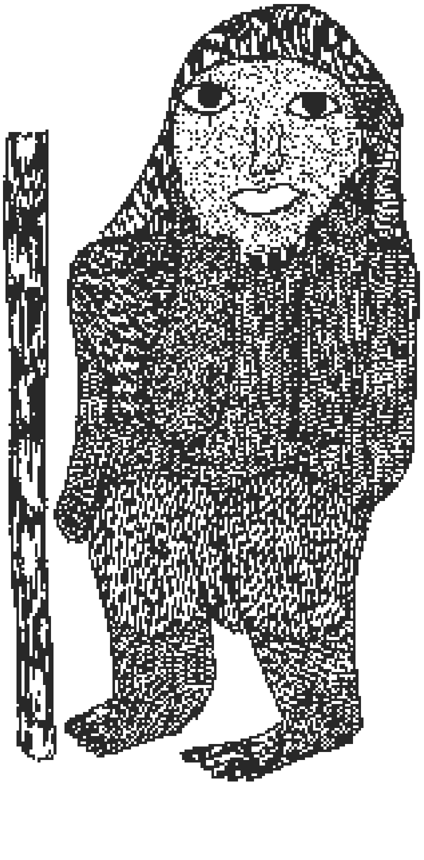

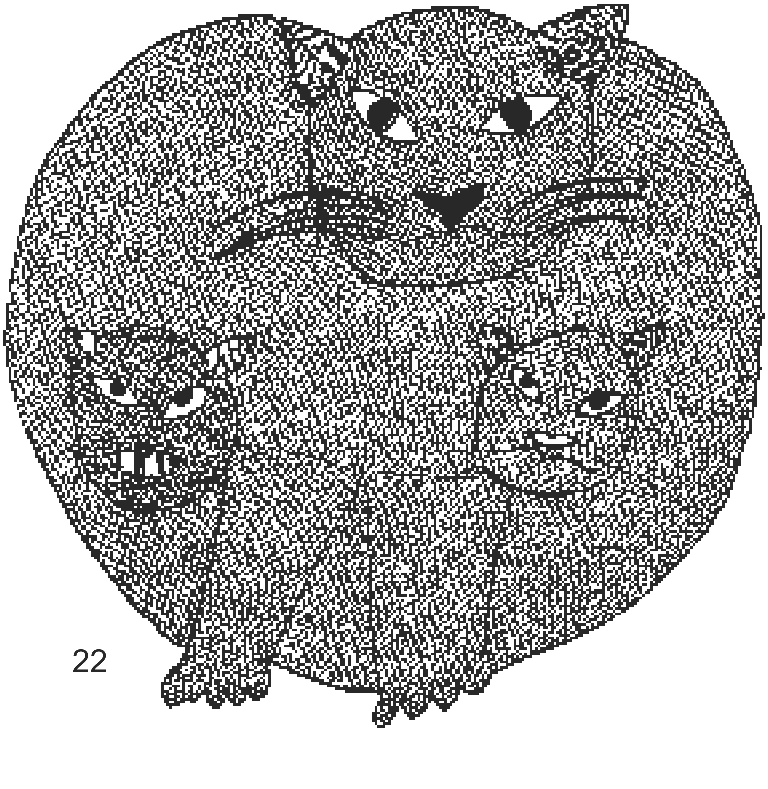

बैठी थी। अम्मा को देखकर बिल्ली ने भागना चाहा, पर बच्चों को छोड़कर भाग नहीं सकती थी। इसलिए कुछ दूर जाकर खड़ी हो गई। अम्मा कुछ बोलीं नहीं। चुपचाप बाहर आईं और एक कटोरे में दूध ले जाकर बच्चों की टोकनी के पास रख दिया और बाहर आ गईं।

बिल्ली ने देखा कमरे में कोई नहीं है तो आकर दूध पीने लगी। मुनिया को बहुत अचरज हुआ कि पहले बिल्ली दूध पी गई थी इसलिए अम्मा उससे गुस्सा थीं, और अब खुद ही उसे दूध पिला रही हैं। अम्मा का यह बदला हुआ रूप मुनिया को बहुत पसन्द आया।

अब मुनिया अम्मा से बार-बार कहती कि भण्डार घर में चलो। मैं बिल्ली के बच्चों को गोद में लूँगी। अम्मा ने समझाया कि बिटिया, अगर तुम बार-बार कमरे में जाओगी या बच्चों को छुओगी तो बिल्ली डर जाएगी। बिल्ली बच्चों को कहीं और ले जाए, यह बात मुनिया को ज़रा भी पसन्द नहीं आई। इसके बाद उसने कमरे में जाने का नाम ही नहीं लिया। पर उसका मन तो पूरे समय उन्हीं बच्चों में लगा रहता था। कैसे गुदगुदे, नरम-नरम बच्चे हैं। एक एकदम काला है, एक बिलकुल अपनी माँ जैसा है। मुनिया का जी चाहता था अपना दूध भी लेकर बिल्ली को दे दे। बच्चे दूध पीएँगे तो जल्दी-से बड़े हो जाएँगे, जैसे वह बड़ी हो गई है। फिर वे उसके साथ खेलेंगे।

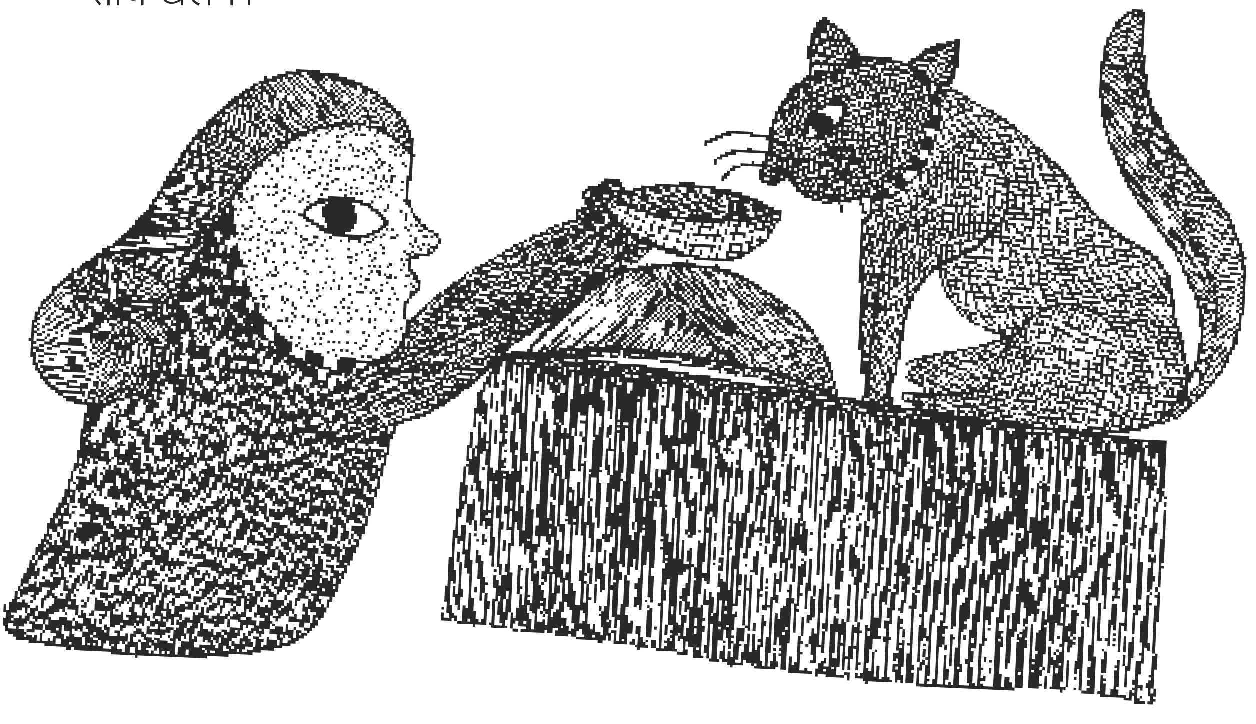

दोपहर को अम्मा जब बिस्तर पर लेटीं तो देखा आसपास मुनिया कहीं नहीं दिख रही। अम्मा उसे ढूँढती हुई बाहर आँगन में आईं तो देखती हैं कि मुनिया भण्डार घर की खिड़की पर बैठी किसी से बात कर रही है। अम्मा चुपके से उसके पीछे गईं कि देखें क्या बातें हो रही हैं, किससे हो रही हैं। खिड़की पर मुनिया बैठी थी और भीतर कमरे में टोकनी में बिल्ली के बच्चे थे। बिल्ली वहाँ नहीं थी। कहीं चली गई होगी।

मुनिया उनसे कह रही थी, "तुम्हारी अम्मा चली गई है, तुम्हारे लिए टॉफी लाएगी। तुमको कहानी सुननी है? अच्छा सुनो - एक अम्मा थी। वह अपने बच्चों को बहुत प्यार करती थी। उनको कभी नहीं मारती थी। उनके लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें लाती थी बाज़ार से।"

मुनिया की कहानी इसी तरह चलती रही। लगता था बच्चे भी, बिना कुनमुनाए उसकी कहानी सुन रहे थे। अम्मा को भी कहानी सुनने में बहुत मज़ा आ रहा था। पर मुनिया उन्हें देखकर कहीं अपनी कहानी बन्द न कर दे, इसलिए जैसे चुपके से आई थीं वैसे ही लौट गईं। पर अम्मा ने उसी समय तय कर लिया कि अब वे बिल्ली को कभी नहीं भगाएँगी। उसे अपने घर में रहने देंगी। वह मुनिया की बहुत अच्छी दोस्त बन जाएगी।

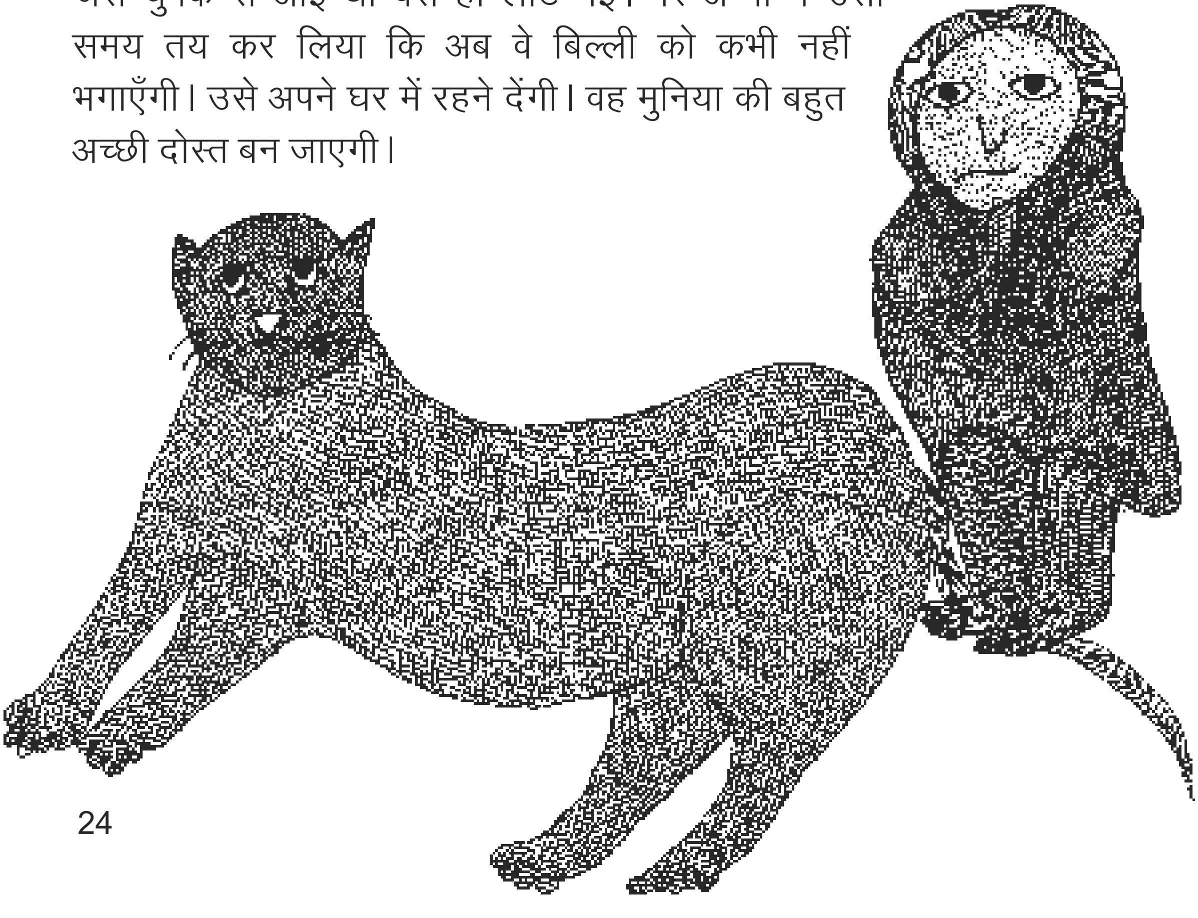

9. बीज

मैं इक बीज हूँ। मैं छोटा भले ही हूँ लेकिन हूँ बड़े काम का। जानना चाहोगे कैसे?

पहले बताता हूँ कि मैं यहाँ तक पहुँचा कैसे। मैं रोज़ हवाओं के साथ खेला करता था। वह मुझे कहानियाँ सुनाती थी। बागों की बातें मुझे पसन्द थीं।

वहाँ जाकर खेलने को जी चाहता था। आज मैं हवा के साथ दौड़ आया। थक गया हूँ। अब नींद आ रही है। यहीं छिपकर सो जाना चाहता हूँ। बसन्त आएगा तब जागूँगा। बताओ, तुम पहचान सकोगे?

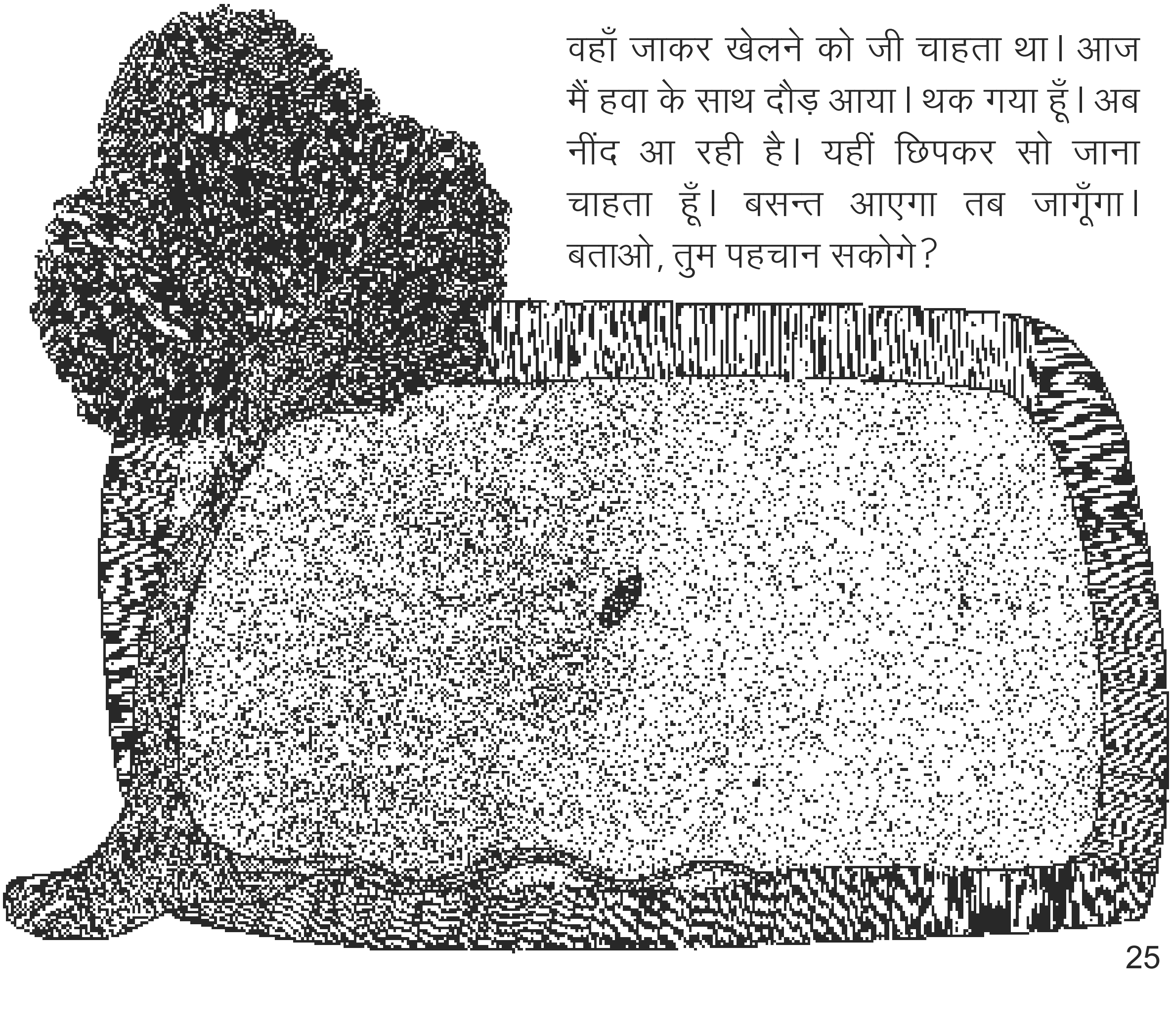

10. नटखट बन्दर

एक बार कुछ बन्दर पेड़ की डालियों पर बैठे थे। वे नीचे देख रहे थे। नीचे कुछ बढ़ई लकड़ी काट और चीर रहे थे और कुछ दूसरे काम कर रहे थे। दोपहर को जब बढ़ई खाना खाने गए तो बन्दर पेड़ों से नीचे उतर आए। उन्होंने बढ़ई के काम को पास जाकर देखा।

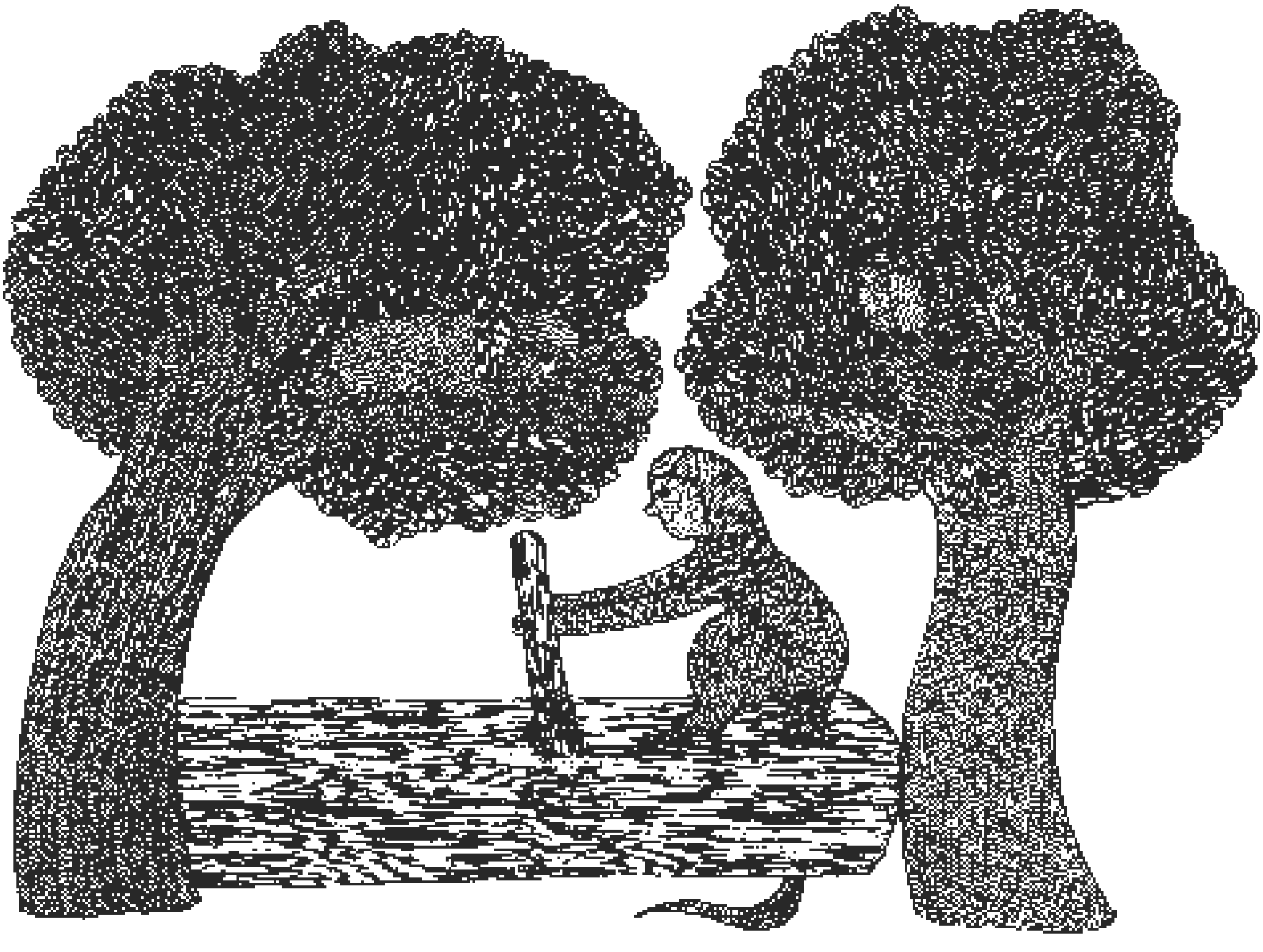

एक बन्दर एक लकड़ी के गट्ठे पर चढ़ गया। वह गट्ठा बीच से चिरा हुआ था। उसके दोनों भागों को अलग रखने के लिए एक पच्चर (छोटी लकड़ी) उनके बीच लगा दी गई थी।

बन्दर ने बीच की छोटी लकड़ी को हिलाया और उसे बाहर निकाल लिया। इससे उसकी दुम चिरे हुए गट्ठे में फँस गई। वह दर्द से तड़पता हुआ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। बाकी सब बन्दर उसके पास खड़े हो गए। कोई उसकी मदद नहीं कर पा रहा था।

जब बढ़ई वापस आए तो सब बन्दर पेड़ों पर चढ़ गए। जिस बन्दर की पूँछ फँसी थी वह वहीं रह गया।

एक बढ़ई आरी लेकर उसके पास आया। उसने बन्दर की दुम काट दी। बन्दर अपनी दुम वहीं छोड़कर भाग गया।

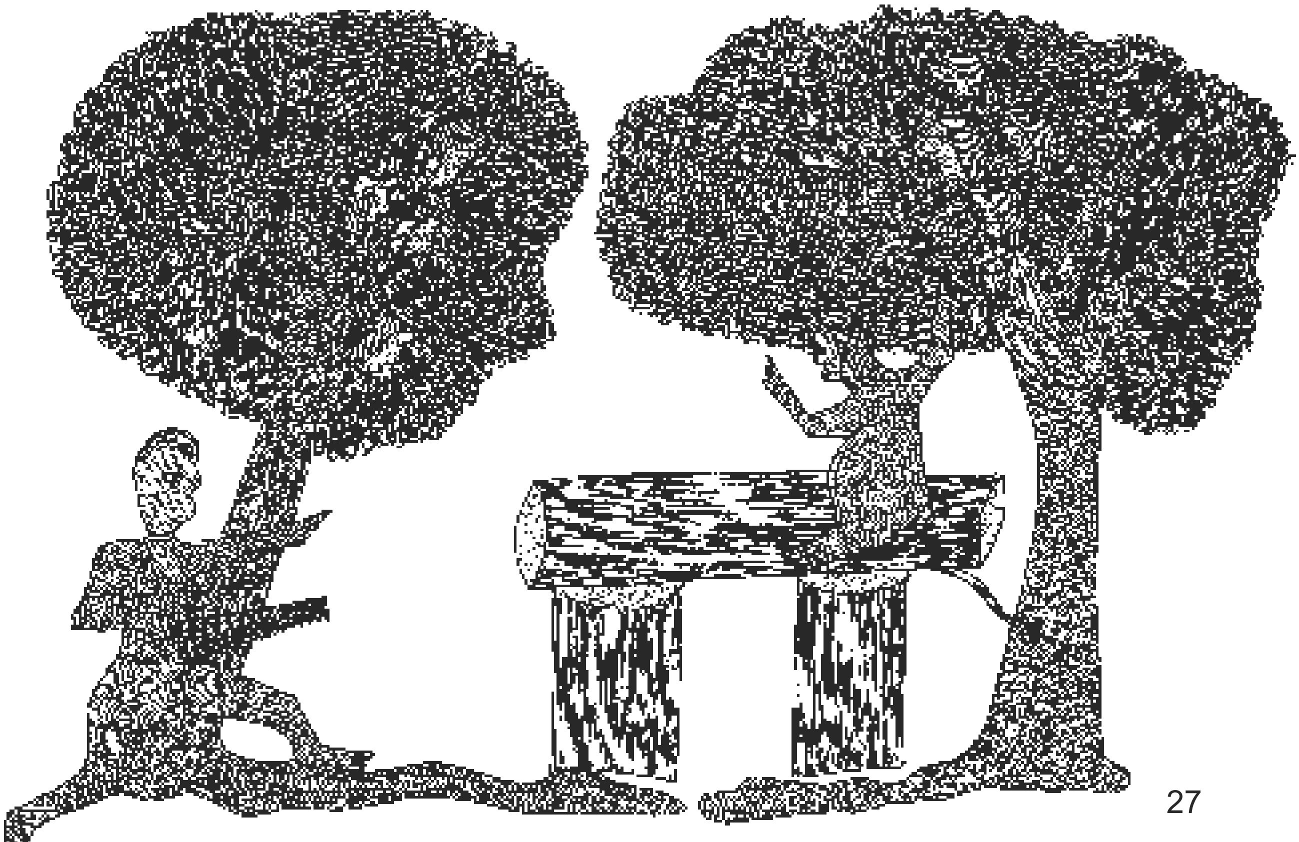

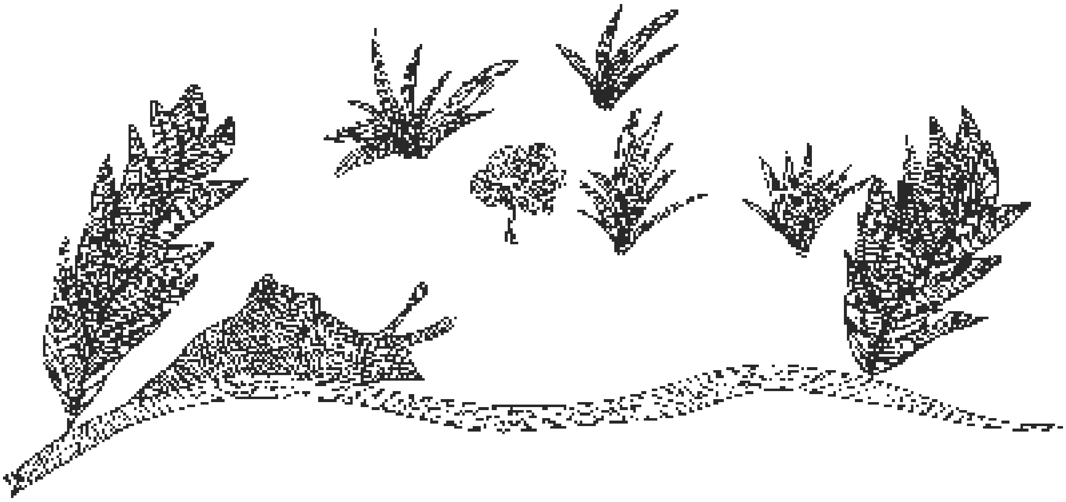

11. बगीचे का घोंघा

बहुत समय पहले की बात है। एक बगीचे में एक घोंघा रहता था। जानते हो घोंघा कैसा होता है?

बगीचा बहुत छोटा और सुन्दर था। घोंघे ने अपनी सारी ज़िन्दगी उसी बगीचे में बिताई थी। जितने धीमे-धीमे वह चलता था, उसे बगीचे के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचने में पूरे दो दिन लगते थे। इतने समय तक वहाँ रहने की वजह से घोंघा बगीचे का कोना-कोना पहचान गया था।

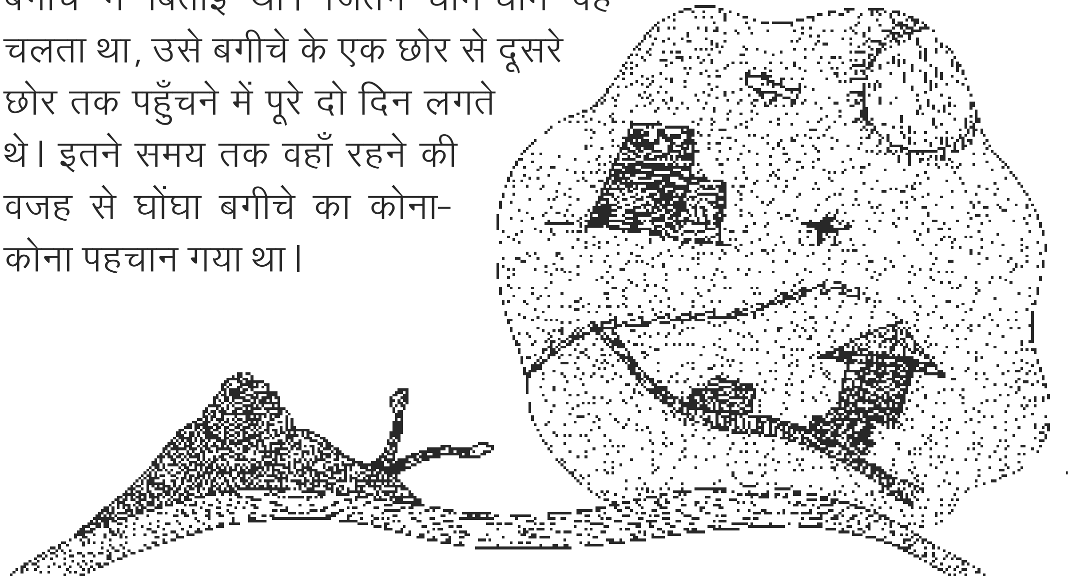

पर कभी-कभी घोंघे को लगता, इस बगीचे के बाहर क्या होगा? कैसी होती होगी बाहर की दुनिया?

बगीचे की दीवार में एक छेद था। घोंघा रोज़ उस छेद को देखता। उसे याद आता कि उसकी माँ उससे कहा करती थीं, “अगर तुमने ज़्यादा बदमाशी की तो मैं तुम्हें इस छेद से बाहर की दुनिया में ढकेल दूँगी।”

घोंघा कुछ और दिन सोचता रहा। फिर उसने तय कर लिया, “मैं बाहर जाकर देखूँगा कि दुनिया कैसी है।”

यह सोचकर उसने अपना सामान अपने शंख में बाँध लिया। अगले दिन सूरज निकलने के पहले ही घोंघा निकल पड़ा। बगीचा पीछे छोड़ दिया। शायद हमेशा के लिए।

घोंघा छेद में घुसा और जल्दी ही बाहर निकल आया। बाहर आते ही घोंघा चकित

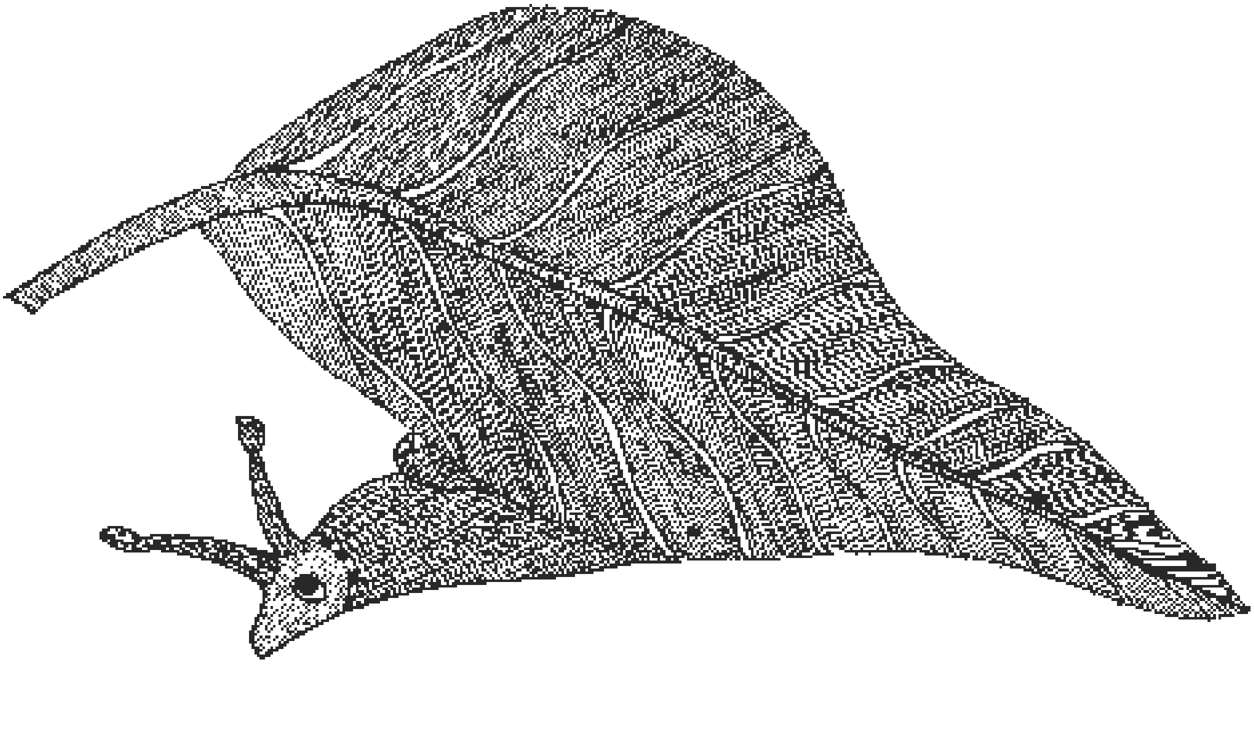

रह गया। जितनी दूर तक उसकी आँखें देख सकती थीं उसके सामने बहुत बड़ा, लम्बा चौड़ा-सा मैदान था।

वास्तव में वह बच्चों के खेलने की जगह थी। पर घोंघे ने तो सोचा ही नहीं था कि इतनी बड़ी जगह भी हो सकती है। "वाह! दुनिया सचमुच कितनी बड़ी है," घोंघे ने कहा।

उसी समय खड़-खड़ की आवाज़ आई। घोंघे को लगा कि पूरा आकाश ढँक गया है। वह डर के मारे ज़ोर से चिल्लाया, "उई!" फिर वह अपने ऊपर हँसने लगा। उसने देखा कि एक सूखा पत्ता उसके ऊपर आ गिरा था। "वाह, दुनिया तो कितनी मज़ेदार जगह है" घोंघे ने कहा। वह उस सूखी-भूरी पत्ती के नीचे से बाहर निकल गया।

थोड़ा आगे एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा हुआ था। घोंघे को लगा यह ज़रूर कोई पहाड़ होगा। वह झट से उस पर चढ़ गया और दुनिया के नज़ारे देखने लगा।

घोंघे ने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार लाल चींटों को देखा। वे अपने लम्बे-पतले पाँवों से तेज़ी से इधर-उधर आ-जा रहे थे। उसने देखा कि एक गिलहरी फुदक-फुदककर तेज़ी से एक पेड़ पर चढ़ गई। उसने देखा कि दूर एक गेंद लुढ़कती हुई जा रही है और एक कुत्ता ज़ोर से उसके पीछे भाग रहा है। "वाह, दुनिया में सब कुछ कितनी तेज़ी से चलता है" घोंघे ने कहा। "बगीचे में तो सबकुछ धीरे-धीरे चलता था, मेरे जैसे।"

तभी अचानक उसने एक ऐसी चीज़ देखी जिससे उसका सर चकरा गया। अभी तक तो घोंघे ने पौधे या छोटे पेड़ ही देखे थे। पर यहाँ पर तो एक ऐसा लम्बा पेड़ था जो पूरे आसमान तक जाता था। बेचारे घोंघे ने कभी खजूर का पेड़ नहीं देखा था।

वहाँ एक और पेड़ था जो इतना बड़ा था कि घोंघा उसके एक छोर से दूसरे छोर तक भी नहीं देख पाता था। बड़ के पेड़ से जो उसका पाला पड़ गया था, इसलिए। घोंघे की आँखें आश्चर्य से और भी खुल गईं। फिर थोड़ी और, और भी चौड़ी हो गईं। उसने कहा, "वाह, सचमुच दुनिया कितनी अद्‌भुत जगह है।" घोंघे ने तय कर लिया कि अब तो वह इस दुनिया में ही रहेगा।

12. फक! फक! फक!

फक! फक! फक! देखो, मैं कितना तेज़ चलता हूँ। जानते हो मैं इतना तेज़ कैसे भाग पाता हूँ?

देखो, मेरे पीछे कितने भारी-भारी डिब्बे लगे हुए हैं। गाड़ियों में कितने सारे आदमी, औरतें और बच्चे बैठे हुए हैं। मैं इतना भारी सामान खींचे लिए जा रहा हूँ। देखो, मैं कैसी मेहनत करता हूँ।

फक! फक! फक! करता हुआ मैं दिन-रात काम करता हूँ। कोयला खाता हूँ और पानी पीता हूँ। मेरा सारा शरीर लोहे का बना है, इसलिए मैं इतना बलवान हूँ।

फक! फक! फक! लो अब मैं चला। चाहो तो कूदकर मेरे पीछे बैठ जाओ...।

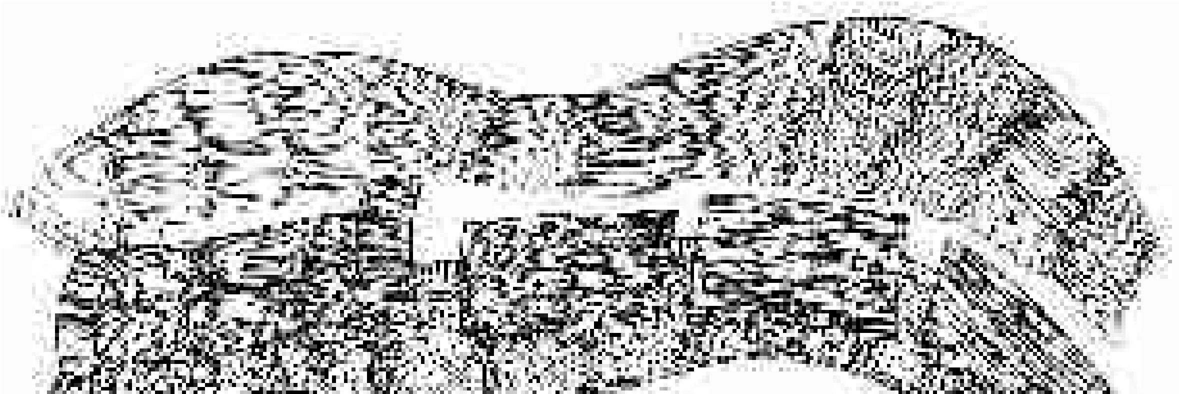

13. धनराज की कमीज़

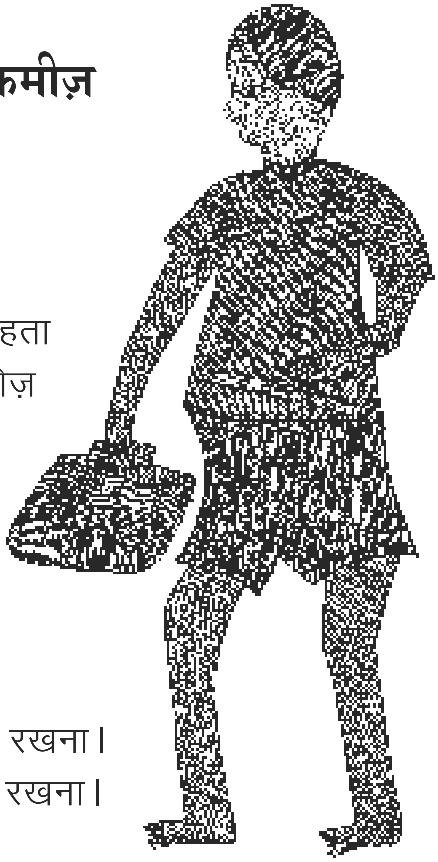

एक लड़का था। नाम था धनराज। वह गाँव में रहता था। रोज़ शाला जाता। धनराज जो कमीज़ रोज़ स्कूल पहनकर जाता था वह फट गई थी।

धनराज के गाँव में एक दर्ज़ी था। धनराज ने उसे एक नई कमीज़ सीने के लिए कपड़ा दिया। उसे धागे की रील भी दी और कहा, "इसे पक्के धागे से सीना, नहीं तो सिलाई उधड़ जाती है।"

धनराज ने दर्ज़ी से आगे कहा, "कमीज़ जल्दी सीकर रखना। स्कूल खुल गए हैं। हाँ, चूहों से मेरी कमीज़ बचाकर रखना। तुम्हारी दुकान में चूहे बहुत हैं।"

अगले दिन से पानी बरसना शुरू हुआ। कई दिनों तक बरसात होती रही। नदी-नालों में पूर आ गया। स्कूल की भी छुट्‌टी रही। धनराज अपनी कमीज़ के बारे में भूल गया।

कुछ दिनों बाद बरसात बन्द हुई। स्कूल खुला तो धनराज को अपनी कमीज़ की याद आई। वह दर्ज़ी की दुकान पर पहुँचा। दर्ज़ी ने कपड़ों के ढेर में से धनराज की कमीज़ निकाली। कमीज़ में कुछ छेद थे। इतने दिन दर्ज़ी की दुकान बन्द रही थी। चूहों ने धनराज की कमीज़ कुतर दी थी।

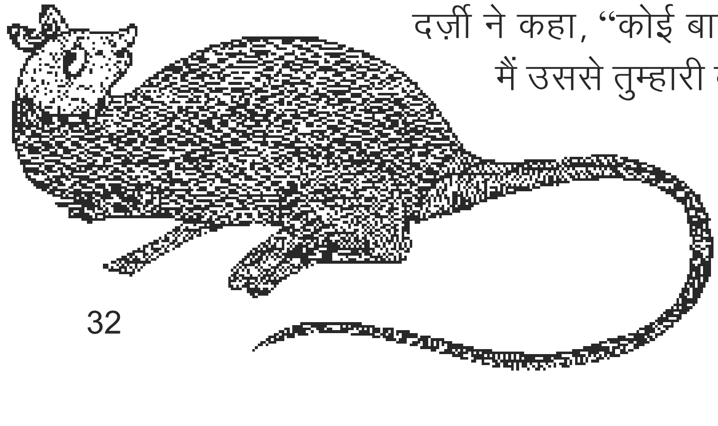

दर्ज़ी ने कहा, "कोई बात नहीं। अभी थोड़ा धागा बचा है। मैं उससे तुम्हारी कमीज़ के ये छेद रफ़ू कर दूँगा।"

तो धनराज को दर्ज़ी ने जो कमीज़ दी वह नई भी थी और पुरानी भी।

14. फर-फर

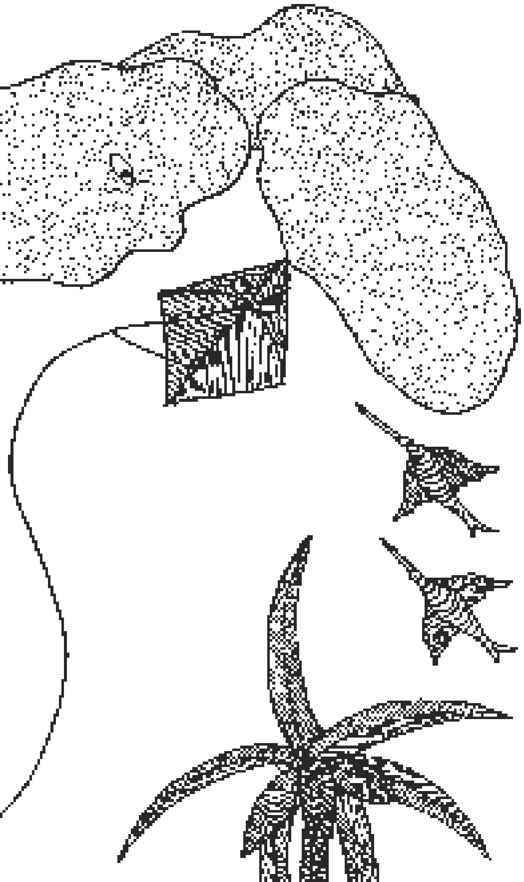

फर-फर! ज़रा ऊपर तो देखो, वाह-वाह, मैं कैसी उड़ी जा रही हूँ। पहले मैं छत से ऊँची हुई, फिर नीम के पेड़ से।

ए लो, अब मैं बादलों में जा पहुँची।

जानते हो मेरा नाम? पतंग...नहीं-नहीं 'कागज़ की चिड़िया'। मेरे पंख भी हैं और पूँछ भी है।

फर-फर! आओ चलो बाग में खेलें। पीठ पर बाँधो डोरी। पंख को ज़रा सम्हालकर पकड़ो। बस, बस। छोड़ो, छोड़ो फर-फर। कहीं मेरा सिर बादल से न टकरा जाए।

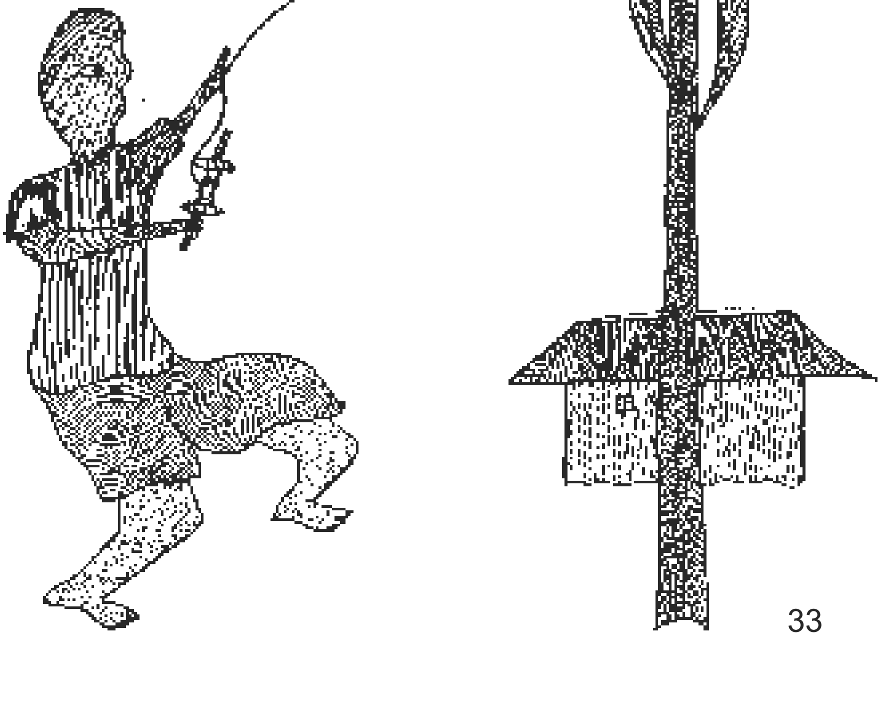

15. झाड़ू

सबेरे उठते ही सब मुझे ढूँढते हैं। जानते नहीं मैं कोने में छिपी हूँ! सारे घर में घिसटते-घिसटते थक जाती हूँ।

तुम लोग मुझे तंग करते हो। कहीं कागज़ फाड़कर फेंक देते हो, कहीं भात गिरा देते हो। बस, मेरे लिए काम बढ़ जाता है। जब तुम दवात गिरा देते हो तो मेरी होली हो जाती है। रंग से खूब भीग जाती हूँ।

हवा मुझे चैन नहीं लेने देती। मुझे चिढ़ाने के लिए कूड़ा बिखेर जाती है। चिड़िया भी घास, तिनके बिखेर जाती है। बस, मुझे सब साफ करना पड़ता है।

घर की सफाई करते हुए मुझे और कौन-कौन सी मज़ेदार चीज़ें मिलती होंगी, सोचो और उनके चित्र अगले पेज पर बनाओ।